शान्ति अग्निहोत्री

वंदना के पल

लेखक
शान्ति अग्निहोत्री

प्रकाशक
प्रयाग निकेतन
31 U. B. जवाहर नगर देहली—7

आमुख

मुझे प्रसन्नता है कि वन्दना के पल आपके हाथों में है।

गीतों की रचना श्रेय मेरे पू० गुरुदेव आदरणीय महात्मा प्रभु आश्रित जी को है। जिनके निश्छल स्नेह और सहज मुस्कान ने मेरे हर कंट का कीर्ण पथ को चलने के लिये सुलभ कर दिया था। हर गीत का जन्म वेदना के अकाट सागर से होता है। इन गीतों का जन्म 1954 से हुआ था जब मैं जीवन के आन्तरिक्ष क्षणों में जीने लगी थी। उन्हीं आन्तरिक्ष क्षणों में कोई भी व्यक्ति जीने लगेगा तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूंगी।

—शान्ति अग्निहोत्री

2-10-89
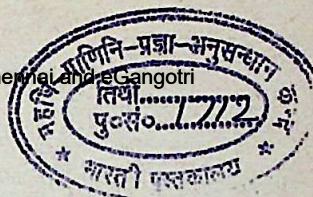
पोथी के पन्ने

कभी-कभी पारिवारिक इतिहास के कुछ पन्नों को पढ़ना-बांचना आवश्यक हो जाता है। खास तौर पर उस समय जब वे पन्ने रोचक सतरों को अपने भीतर समेटे हुए हों।

हमारे माता-पिता द्वारा स्थापित अग्निहोत्र की अर्द्धशताब्दी है यह। देश के जीवन में भले ही पचास वर्ष राई के दाने के समान दिखें पर व्यक्ति के जीवन में ये वर्ष दीर्घ परम्परा को छिपाये रहते हैं। जैसा कि मेरी स्मृति काम करती है। पीलुओं और खजूरों के गांव, कोटअद्दू के आंगन में औरतों-आदमियों के झुंड के झुंड इकट्ठा हो गये थे। अनाज की कूटा-पीसी आंगन की लीपा-पोती; साधु-सन्तों की आवा-जाहीं, वेदपाठियों का समवेती स्वर सभी ने मिलकर टीले पर बसी उस हवेली को संस्थान-सा बना दिया था। 1940 का ज़माना था वह। स्वतन्त्रता प्राप्ति का अंतिम चरण था, हम सब लोग अपने भीतर 'भारत छोड़ो' कहने का साहस जुटा चुके थे।

'मेरा रंग दे बसंती चोला'
'कन्तो नी गांधी दा चरखा'
'हिन्दोस्ताँ के वीर हम'

रोज़मर्रा की प्रभातफ़ेरियों ने हमारे घर में भी पूनी-चरखे और खादी को प्रतिष्ठित कर दिया था। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। मेरे पिता लाहौर में आर्थिक दृष्टि से पूरी तरह प्रतिष्ठित हो चुके थे। जैसा कि हर परिवार में होता है—पारिवारिक प्रतिष्ठा का मूल केंद्र-लक्ष्मी पूजन। अचानक क्या हुआ कि लाहौर के किला गूजर सिंह नामक स्थान में होने वाले यज्ञ की खबर ,मेरे पिता तक भी आन पहुँची और वे सपत्नीक वहां जा पहुँचे। संत-स्वरूप महात्मा प्रभु आश्रित के कुछ शब्दों ने उन्हें ऐसा प्रभावित किया कि वे अपने गांव कोटअद्दू में यज्ञ के लिए प्राणपण से जुट गये। जैसा कि उस ज़माने में हुआ करता था। हर घर का काम पूरे गांव का काम हुआ करता था। जैसा कि मुझे याद है उस

समय तक गांववासियों ने उस शब्द को केवल सुना भर था। अब साक्षात् यज्ञ-भगवान के दर्शन करने का सौभाग्य। लोगों का समुद्र ही समुद्र, जिसे हमारे पूर्वजों की हवेली ने अपने भीतर समेट लिया था। तब से आज तक हमारे परिवार ने आंधी, पानी की आवाज़ भी सुनी तो उसमें भी ऋचाओं का स्वर मिला रहा। कथनी में यह सब जितना आसान लगता है करनी में उतना ही मुश्किल। उसी वर्ष हमारे परिवार में पुत्रजन्म ने श्रीवृद्धि की। उस बालक का नाम दर्शनकुमार रखा गया। भावना यही थी कि यह बालक आत्मा और परमात्मा के दर्शन करें। वैसे हर प्रकार के नामकरण में खुद की और परिस्थिति की मानसिकता काम करती है। यदि दादी नानकी की भगवान गणेश के प्रति अनन्य निष्ठा थी जिसने मेरे पिता को दास्य भाव की भक्ति जैसा नाम दिया तो मेरे नामकरण के पीछे सामंती प्रकृति कर रही होगी। जैसा कि मैं कह चुकी हूं वह ज़माना अंग्रेजों से संघर्ष का ज़माना था। भारत और उससे संबंधित नामों से होड़ सी लगी रहती थी। बच्चों का नाम—भारतभूषण और भवन का नाम भारत भवन और कंपनी का नाम भारत कंपनी। इस प्रवृत्ति से अलग-अलग। जैसा नाम मेरे भाई को दिया गया था बराबर उसे इस नाम की पहचान करायी जाती रही।

कोटअद्दू का यज्ञ कुंड ज़मीन में और लाहौर का यज्ञ कुंड छत पर बनाया था। गांव की धरती और नगर का आकाश दोनों मिलकर एक हो गये थे। याद नहीं पड़ता कि तब से अब तक किसी एक दिन का भी व्यवधान। जिस दिन बच्चों में से यदि कोई हवन नहीं करता तो उस दिन दंडस्वरूप भूखा रहना पड़ता।

यह सब इतना अचानक नहीं हुआ था जैसा कि सतही तौर पर दिखाई देता था। धरती बहुत पहले ही तैय्यार हो चुकी थी। मेरे दादाजी भोला राम की प्रवृत्ति—धर्मात्मा सदाशय की। दुनिया की चाल-ढाल को समझ पाने में पूरी तरह असमर्थ। लेनदारी के नाम पर शून्य और देनदारी के नाम पर हज़ारों-हज़ारें। चंचला लक्ष्मी हवेली छोड़ने पर आमदा, और घर का इकलौता बेटा रोज़ी-रोटी की तलाश में मीलों दूर भटकने को मजबूर। बचपन में पाया-सीखा उत्तरदायित्व मेरे पिता को कई दिशाओं में ले गया। तब वे तीन रुपया महीना कमाते, डेढ़ रुपया महीने से गुज़ारा करते और डेढ़ रुपया मां को भेजते। शायद
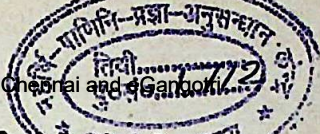
मां के अंतः से निकली आशीर्वाद ही रूठी लक्ष्मी को फिर से वापिस ले आयी।

जिन दिनों मेरे दादा और पिता सोने की घड़ी लगाया करते मेरी दादी हाथ से आनाज कूटती-पीसती, चक्की की घर्र-घर्र में।

'पोथी पढि पढ़ि जगमुआ पंडित भया न कोय।'
'भले चाकर राखो जी, चाकर राखूंजी चाकर
रहसूं वा गलगा सूं नित उठ दरसन पासूंजी।'

कबीर मीरा के स्वरों को गूंज देती और अपने बच्चों में ऐसे संस्कार डालती जो अलग-अलग थे। घर में इकलौती बुआ थी नाम दिया गया रामप्यारी। जमीदार परिवार की इकलौती रूपवती कन्या। सुरुचि संपन्न परिधान में लिपटी लंबी और गौरवर्णी काया। इकलौतेपन के हर गुण-स्वभाव से संपन्न। आंख खुले तो देखते चले जाओ लाड़-प्यार और लाड़-प्यार! संत स्वरूप फूफा लोकनाथ जी! संत कबीर के मस्तक का तेज तो मैंने पोथी में पढ़ा हैं इनके नूर से तो तन-मन के किल्विष धुल जाएं।

गुरु ग्रंथ साहिब जी, जपजी साहिब, कबीर-मीरा की वाणियाँ वैदिक ऋचाओं में पूरी तरह से घुल मिल गयी और हमारा परिवार एक पूर्ण याज्ञिक परिवार में परिर्वतित हो गया और हमारा पारिवारिक नाम 'कुकरेजा' 'अग्निहोत्री' में। एक लंबे अरसे तक गुरुदेव महात्मा प्रभुआश्रित जी को छत्रछाया बनी रही। वे गुरुतुल्य ही नहीं पिता-तुल्य भी थे। हर तरह के संकटों से उबारा करते,—डगमगाते पैरों को गति देते।

'संत समागम हरिकथा तुलसी दुर्लभ होय'

पढ़ते-पढ़ाते मुझे भी वर्षों हो गये।

लेकिन कुछ गज धरती पर बने 'प्रयाग निकेतन' को देख कर दुर्लभता सुलभता में बदल जाती है। साधु-संतों के चरण पखारता यह प्रांगण। यूं तो संतों के अनगिनत वरदहस्तों ने इस परिवार को आशीर्वचन कहे हैं लेकिन पंडित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, महात्मा दंडी, महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द विदेहजी प्रमुख है। वर्तमान में स्वामी दीक्षानंद जी पितृतुल्य कुलगुरु स्वरूप।

साधु संत तुल्य मेरी मां—शांति देवी। प्रातः स्मरणीय और रात्रि स्मरणीय। जिनके अध्ययन और अनुभव ने इस प्रांगण को देव-भूमि बना दिया है। किसी ज़माने में इनका नाम हुकमदेवी हुआ करता था। विवाहोपरांत शांति देवी बन गया। लड़कियों के लिये जब स्कूल जाना वर्जित जैसा था, उस ज़माने में इन्होंने आठवीं पास की थी। इनके शिष्ट सौंदर्य की चर्चा गांव में दूर-दूर तक थी और पारखी बुआ इस अनिंद्य सुंदरी को रेशमी डोर में बांधकर अपने घर ले आयीं।

पारिवारिक परंपरा की गोशाला, भोजनशाला और अतिथिशाला में मेरे पिताजी ने यज्ञशाला और पाठशाला को भी सम्मिलित कर लिया था। रेल की पटरियों के पास भारत खादी कार्यालय की स्थापना की गयी जिसमें दो सौ खड्डियां थीं। वेतन अन्य कार्यालयों की अपेक्षा ज्यादा। शर्त यह भी कि कर्मियों को मांस-मछली, शराब-सिग्रेट का त्याग कर सवेरे पांच बजे प्रभातफेरी कर लोगों को जगाना और हर हफ़्ते गली-कूचे की सफ़ाई करनी पड़ती थी। पूरा गांव शीशे की तरह साफ़-सुथरा। मुलतान से टोबे और टोबे से मुलतान आने-जाने वाली रेलगाड़ियाँ जब स्टेशन पर रुकतीं तो सभी पानी की बाल्टी लोटा लिए, नाम स्मरण करते सभी यात्रियों को पानी पिलाते। जब तक सभी यात्री पानी न पी लेते रेलगाड़ी रुकी रहती। इन दिनों जब बिजली के नाम पर सरसों के कड़वे-मीठे तेल का दीपक जला करता और पानी के नाम पर रहट लगे कुओं का मुंह ताकना पड़ता तब सभी यात्री कोटअद्दू स्टेशन का इंतज़ार करते। दूसरे शहरों में वह गाँव पानी वाले गांव से मशहूर हो गया। बिना किसी भेदभाव के जल-अर्पण। यह एक अद्भुत कार्य था। शायद परिचितों-अपरिचितों की अक्षण आशीष मेरे पिता और परिवार की सर्वदा-सर्वदा रक्षा करता रहा।

जब पौंड-शिलिंग, पैसे और रुपये, आने पाई का ज़माना था। भूगोल के नाम पर सरकारी स्कूलों में मुलतान मुजफ़रगढ़, सिणावां, गुरमान्या आदि नामों को याद करते करते उंघने लगते तब यह जरूरत महसूस की गई कि एक ऐसे अलग-थलग स्कूल की स्थापना की जाए जिसमें नैतिक-धार्मिक शिक्षा दी जाए। (लड़कियों के लिए) पिताजी ने स्कूल खोला। बच्चियों के भावी जीवन की आधारशिला रख दी गयी। भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री कैप्टन

राकेश शर्मा के दादाजी पंडित लोकनाथ विद्यावाचस्पति से अनुरोध किया गया कि वे व्यस्त जीवन में से कुछ क्षण निकाले। वे तत्काल सहमत हो गये। प्रांगण में संस्कृत की ऋचाएँ गूंजने लगी। इसी दौरान उन्होंने सुप्रसिद्ध गीत की रचना

'यज्ञ रूप प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवे छल कपट और मानसिक बल दीजिए।'

की। सरकारी स्कूल छुड़वाकर मुझे भी पंडित विद्यावाचस्पति जी के पास पढ़ने के लिए भेज दिया गया। ये दोनो दुर्लभ कार्य पारिवारिक प्रतिष्ठा को कितना दे पाये, नहीं कहा जा सकता। लेकिन उसके पीछे परिवार-समाज की जो भावना नाम कर रखी थी वह अपने आप में एक बहुगुणी भावना थी। पर्वतों से फूटते निश्चल स्नेह की तरह। परिवार में अक्सर मां की अवाज़ में

'वांदी वीरा वीर लुड़ आया लिवंडा
धुप न लगे तेरां मक्खण दा पिंडा॥

वह लिवंडा (टींडा) शायद बहुत दूर तक चला गया। माखन से तन को उसने धूप न लगने दी। मां की उस निश्छल भावना में शायद किसी के भी मारवन जैसे तन को धूप नहीं लगने दी। यदि कहीं धूप थी तो उसके स्नेहलि आंचल ने सिर पर वितान सा तान दिया।

पूरा परिवार अनुशासन में निबद्ध + लक्ष्मी-सरस्वती की कृपा, यश की पराकाष्ठा सरलता सहजता की होड़ में सांस लेता यह अग्निहोत्री परिवार। जिसकी जड़ें गहरी बहुत गहरी एक दूसरे से मिली-सटी। पता ही न चले कौन शाख कौन जड़।

इस समय हमारे परिवार की चौथी पीढ़ी है। स्व० दादी जानकी जिनकी अगस्र-अनुकम्पा में स्वप्न में भी रक्षा करती है। स्व० पिता गणेशदास अग्निहोत्री। उनके ज्येष्ठ पुत्र हरिदत्त पत्नी सुशीला। ज्येष्ठ पुत्री राजकुमारी (वेद कुमारी)। कनिष्ठ पुत्र दर्शन कुमार जल में रहकर भी जल से अलग रहने की सरलता किए पत्नी सरोज। ज्येष्ठ प्रपोत्र तरुण पत्नी मंजुला, प्रपौत्री पुनीता कनिष्ठ पुत्र वरुण। राजकुमारी की ज्येष्ठ पुत्री ज्ञानप्रभा (सुनीता) दोहिज यज्ञेश्वर और पत्नी मीना। एक-एक पल को भरपूर जीता-भरा-पूरा परिवार।

'मेरे आगे भी यज्ञ और मेरे पीछे भी यज्ञ।'

मेरे पिताजी की अंतिम इच्छा। वे बार-बार यही कहते-दुहराते। नारिवेल-सा समय की पृष्ठ पर आरूढ़ उनका बहुमुखी व्यक्तित्व। दैनिक, मासिक; वार्षिक यज्ञों की शृंखलाओं में परिचित-परछाई खोजती उनकी दूरदृष्टि, ताल-ताल बैठा, उड़ान भरता मानसहंस-सा श्वेत-धवल उनका अंतःकरण और निश्छल स्नेहाभिव्यक्ति ! शायद यही सब का जिसमें उनकी अंतिम इच्छा पूर्ण की।

'साधु संतों का समागम।'
'अच्छा तो मेरा नमस्कार। सबको नमस्कार।'
'मुझे तो बहुत दूर जाना है।'
'कोई अंतिम इच्छा ?'
'नहीं ! यज्ञ !'

छह फुटी काया तजकर उनका यह हंस अकेला उड़ जाता है। पता नहीं कौन-से लोक में ? अश्रुपूरित नेत्र अंतिम बिदाई देते झुके माथे जुड़े हाथ, नमित मन सबने मिलकर उन्हें भी देवतुल्य बना दिया है।

'ओं लोमम्य: स्वाहा लोमम्य: स्वाहा'
की अनुगूंज सामग्री काष्ठ में व्याप्त हो गयी है।

परिवार के लोग अग्नि समर्पण के बाद अस्थि चयन कर उन्हें कालिन्दी के विशाल हृदय में प्रतिष्ठित कर खाली हाथ घर लौट आए हैं। वही कालिन्दी जिसके तट पर तमाल के वृक्ष, कृष्ण की बांसुरी और आज मौन स्वर हैं।

108 यज्ञ कुंडों वाला आर्ष गुरुकुल एटा की पवित्र भूमि। कोटअद्दू में जन्मे इस 'गणेसा' की याद को ताजा करने परिवार पहुँच गया है यहां न धरती की सीमा; न आकाश की सीमा और न आत्मा की सीमा। वस्त्र-परिवर्तन की तरह शरीर परिवर्तन और स्थान परिवर्तन !

यह अर्द्धशताब्दी हम सबके लिए भी पहचान चिन्ह। चौथी पीढ़ी के कंधों पर उत्तरदायित्व सौंपना उनका परिचय पत्र शायद परिवार की निजी-मंजूषा में अमूल्य निधि-तुल्य स्थान पाता रहेगा।

राज बुद्धिराजा
जी-233 प्रीत विहार,
दिल्ली-110092

मौन का महत्व

१. मौन जहाँ सत्य की रक्षा करता है वहाँ क्रोध का शमन करता है।
२. मौन से मानव को अपनी त्रुटि का भान होता है।
३. मौन ही मानव चरित्र का साधन होता है।
४. मौन से मानव की स्मृति बढ़ती है।
५. मौन ही ईश्वर विश्वास बढ़ाता और भय से दूर रखता है।
६. मौन ही अपने चरित्र की उन्नति का साधन है और जितनी उन्नति चाहो इसी मौन से कर लो।
७. मौन से मानव को अपनी यथार्थ वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है।
८. मौन ही वाणी के संयम का उत्तम साधन है।
९. मौन ही कुसंस्कारों, दुर्वासनाओं, दुर्व्यसनों कुचेष्टाओं और दुर्गुणों की परीक्षा का उत्तम साधन है।
१०. मौन ही सचमुच बड़ा भारी गुण है। मानो ईश्वर की देन है।
११. मौन ही आत्मदर्शी बनने का विद्यालय है।
१२. मौन ही प्रत्येक प्रकार के ज्ञान को बढ़ाता है।

१३. मौनी मनुष्य के शत्रु बहुत कम होते हैं। यदि होते भी हैं तो मौनी से भयभीत रहते हैं।

—प्रभु आश्रित

—०—

वाणी का महत्व

१. वाणी ही परमात्मा की दी हुई विचित्र विभूति है।
२. वाणी ही मन के विचारों को प्रकट करती है।
३. जब योगी जन इसी वाणी से प्रभु गान करते हैं तो सिंह भी अपना स्वभाव भूल जाते हैं।
४. इस वाणी पर संयम करने वाला इन्द्रियों को वश में कर लेता है।
५. इस वाणी से ही मानव प्रभु भक्ति द्वारा जन्म सफल कर सकता है।
६. इस वाणी में आकर्षण और विकर्षण की शक्ति है। इसी के बोल में जादू है। प्रेम और घृणा है।
७. इसी वाणी के स्वाद में फंस कर मनुष्य आहार के पाप करके मन को दूषित व मलिन बना देता है।
८. इस वाणी से मनुष्य सत्य, असत्य बोलता है। सत्य से परमात्मा प्रसन्न और असत्य से परमात्मा अप्रसन्न होते हैं।

९. सत्य बोलने से वाणी का बल बढ़ता है।
१०. प्रिय और मधुर बोलने से वाणी का यश बढ़ता है।
११. जो वाणी लोभ, असत्य, छल कपट से रहित है। वह निर्मल होती है।
१२. जो वाणी कटु, कठोर, अशुभ, अशिव नहीं और अहंकार रहित है वह निर्दोष है।
१३. कटु, कठोर, असभ्य, अशुभ, निन्दा आदि सब वाणी के अवगुण हैं।
१४. अतः मनुष्यों को चाहिए कि मन और वाणी को सदा वश में रखें। इसलिए वाणी की सावधानी की बड़ी आवश्यकता है।

—प्रभु आश्रित

—०—

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

रक्षाबन्धन पर्व चातुर्मास में ब्रह्मचर्य व्रत की आवश्यकता

॥ ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ॥

१. रक्षा किसकी की जाती है? कमजोर की।
२. किससे रक्षा की जाती है? शत्रुओं से।

३. कमजोरी किसमें आती है ?

शरीर में[१] , मन में[२] , बुद्धि में[३] और आत्मा में[४]

४. कमजोरी क्यों आती है ?

१ शरीर में—कमज़ोरी वीर्य की कमी से ।

२ मन में—कमज़ोरी श्रद्धा की कमी से ।

३ बुद्धि में—कमज़ोरी विश्वास की कमी से ।

४ आत्मा में—कमज़ोरी ज्ञान की कमी से ।

५. कमजोरी कब आती है ?

१ विषयों में रुचि होने से वीर्य में

२ व्यवहार में रुचि होने से मन में

३ संशय से बुद्धि में

४ अहंकार से आत्मा में कमजोरी आती है ।

६. शत्रु कौन हैं ?

वैसे तो शत्रु बहुत हैं जिनका आरम्भ प्रवेश एक से होता है । माया का प्रपंच फैला हुआ है और शरीर—सूक्ष्म शरीर में भी इसकी आसुरी शक्तियां काम कर रही हैं ।

७. माया का प्रपंच कैसे काम करता है ?

संशय एक गुप्तचर है माया का । वह कुतर्क के हथियार को लिए अहंकार की खुशामद करता है, उसे प्रसन्न करके बुद्धि में आ विराजता है क्योंकि अहंकार का स्थान यही है ।

८. कुतर्क क्या करता है और पतन कैसे होता है ?

बुद्धि को ऐसे झमेले में डाल देता है कि उसे विश्वास के पद से गिरा देता है। बस यहीं से ही (आध्यात्मिक) कमजोरी का आरम्भ होता है।

९. आध्यात्मिक—कमजोरी से क्या होता है ?

धीरे-धीरे अहंकार जो प्रधान मन्त्री अशुद्ध माया का है, काम, क्रोध, लोभ आदि को बुला लेता है और ये शत्रु, महाशत्रु जीवात्मा के बन जाते हैं—अथवा ज्ञान के।

१०. इसका क्या उपाय है ?

इससे रक्षा के लिए रक्षा-बन्धन या रक्षा सूत्र बांधा जाता है।

११. कौन बांधता है ?

अपने आप नहीं, अपितु बँधंवाया जाता है। बांधने वाला ब्राह्मण रक्षा साधन बताता है। और साधन करने के लिए व्रत धारण करता है।

१२. साधन क्या हैं ?

१. सबसे पहले शरीर रक्षा के लिए विषयों से दूर रहने के लिए ब्रह्मचर्य का साधन।
२. मन की रक्षा के लिए, व्यवहार शुद्धि के लिए—कमाए अर्थ को उपकार, सेवा और यज्ञ में लगाने की श्रद्धा पैदा करता है।

३. बुद्धि की रक्षा के लिए—सत्संग, स्वाध्याय (वेद का) बन्धन लगाता है।

४. आत्मा की रक्षा के लिए—भक्ति ध्यान का उपाय सिखाता है। एक नियमित काल तक साधन करने का आदेश देता है।

१३. ग्रीष्म का प्रभाव शरीर पर आधिभौतिक :—

ग्रीष्म ऋतु में सब चीजें गर्म होती हैं। यही प्रकृति का नियम है। वीर्य भी ऐसा ही बिखरा रहता है।

१४. ग्रीष्म ऋतु का प्रभाव शरीर पर (आधिदैविक)

ग्रीष्म ऋतु में काम और अहंकार के परमाणु अधिक होते हैं।

१५. वर्षा ऋतु का प्रभाव शरीर पर (आधिभौतिक)

वर्षा ऋतु में जठराग्नि कम होने से बल कम होता है।

१६. वर्षा ऋतु का प्रभाव पृथ्वी आदि पर (आदिभौतिक)

वर्षा में विषैले जन्तु अधिक होते हैं और जल की अधिकता से और जल के न सूखने से पृथ्वी में सड़ांद पैदा हो जाती है। उससे पागलपन के विषैले परमाणु आकाश में घुसे रहते हैं।

१७. वर्षा ऋतु का प्रभाव मन पर (आधिदैविक) :—

वर्षा ऋतु में काम और क्रोध के परमाणु अधिक होते हैं। जैसे कुत्तों में।

१८. इन सब कुप्रभावों से बचने के लिए क्या करना चाहिए ?

ब्रह्मचर्य की रक्षा आवश्यक है।

१९. शरद् में क्या होता और क्या करना चाहिए।

शरद् में नाश के परमाणु होते हैं जहाँ जल सूखते हैं, वहां वीर्य फैले हुए मन्द अग्नि हुए भी विषैले परमाणु आ जाते हैं तब इन दिनों में प्रकृति वीर्य से भी इन्हें जुदा, नाश और शुद्ध करने में लगी रहती है ! तब भी ब्रह्मचर्य करना चाहिए।

२०. हेमन्त में क्या होता है ?

शरद् के बाद हेमन्त का प्रारम्भ होता है। तो वीर्य शुद्ध अपने स्थान पर जमा होता है। उस समय शारीरिक, मानसिक बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति का सद-उपयोग उचित है।

२१. हेमन्त में क्या करना चाहिए ?

योगी भक्त अपने ध्यान में, बौद्धिक अपने विचार में, मानसिक अपने व्यवहार में, शारीरिक अपने बल का लाभ लेवें तो सुखी रहें अर्थात् मार्गशीर्ष की अमावस्या तक यह ब्रत (ब्रह्मचर्य ब्रत होना चाहिए)।

—प्रभु आश्रित

—०—

वंदना

मेरे प्रभु जी मैं तेरे दर करूं वंदना ।
बार-बार वंदना लख बार वंदना ।।

१. चरनों में ऐसी झुक जाऊं ।
तन मन कीं होश न लाऊं ।।
छम-छम प्रेम आँसू बरसाऊँ ।। करूं…

२. वृत्ति अंदर ही टिक जावे ।
बाहर की कोई सुध न पावे ।
दिव्य ज्योति से मन हरशावे ।।करूं…

३. पाऊं परम आनन्द अपार ।
भक्ति की हो अमृत धारे ।।
बुद्धि में हो सत्य विचार ।।करूं…

४. कई जन्मों की यही पुकार ।
अंग-अंग में हो प्रभु दीदार ।।
सच्चे प्रेम की हो तार ।। करूं…

—०—

स्तुति

हे प्रभु, हे प्रभु, हे प्रभु, हे प्रभु ।
अंदर तू बाहर तू, तू ही तू, तू ही तू ।

१. तेरी रचना का अन्त न पाया किसी।
सारा ज्ञान न तेरा सुनाया किसी।
पूरा भेद न तेरा बताया किसी।
है तू व्यापक सबसे ही न्यारा है तू।।

२. ध्यानी ध्यान लगाकर हार गये,
ऋषि मुनि भी कर सच्चा प्यार गये।
योगी दर्शन पा बलिहार गये।
कर जोड़ झुकूं मेरा स्वामी है तू।

३. तेरे द्वार आई भटकाई पिता।
कोटि जन्मों से मेरी जुदाई पिता।
तेरे दर पर हो मेरी सुनाई पिता।।
रहूं तुझ में मगन मेरा जीवन हो तू। हे प्रभु...

—०—

ओ३म् महिमा

सृष्टि के तार-तार में मेरे ओ३म् छिपे बैठे हैं।
इस माया के विस्तार में। मेरे...

१. यह लोक लोकांतर सारे।
क्या दृश्य हैं न्यारे-न्यारे।।
हर स्वासों की झंकार में। मेरे ओ३म्......

२. योगी जन ध्यान लगाते।
ऋषि मुनि तेरा यश गाते।।
भक्तों की मस्त पुकार में। मेरे......

३. नभ पृथ्वी चांद सितारे ।
हैं पर्वत भारे-भारे ।।
सागर की गहरी धार में । मेरे ओ३म्......
४. कहीं अंत न तेरा पाया ।
सब हारे सीस झुकाया ।।
मुक्ति के ऊंचे द्वार में । मेरे......
सृष्टि के तार-तार......

—०—

विनय

प्रभु अपनी विनय सुनाने को मैं आई तेरे द्वार ।
मेरी पाप भरी इस नैय्या को प्रभु कर दो भव से पार ।।

१. मैं देख लिया जग सारा ।
न बनिया कोई सहारा ।
सब मतलब का परिवार जी ।
अब सुन लो नाथ पुकार ।
२. कई जन्मों की भटकाई ।
जीवन दी कदर न पाई ।
विषयां संग प्रीत लगाई जी ।
मेरी नैया है मंझधार ।
३. दु:ख दर्द मैं किसे सुनाऊं ।
कहीं ठौर न अपना पाऊं ।

सब दर से धक्के खाऊं।

प्रभु करुणा हाथ पसार।

४. कर जोड़ प्रभु तेरे आगे।

सत्य ज्ञान की ज्योत जगादे।

भक्ति का रंग चढ़ा दे।

है विनती बारम्बार प्रभु····

—०—

प्रभु दर

दीनबन्धु के दर पर जाना है।

मेरा और न कोई ठिकाना है।।

१. मेरा और न कोई ठिकाना है।। मेरा······

२. दुनिया के जो भी साथी हैं।

सब मतलब के ही नाती हैं।

अपना ही बनिया बेगाना है।। मेरा······

३. किस दर पर जाकर अर्ज करूं।

किस घर से खाली झोली भरूं।

चलता न कोई बहाना है।। मेरा······

४. वह दीन दुःखी की है सुनता।

प्रभु बिगड़ी में भी है बनता।

बस उससे प्रेम बढ़ाना है।। मेरा······

५. वह सब सृष्टि का वाली है।

वह व्यापक डाली डाली है।
चरणों में सीस झुकाना है।। मेरा......

—०—

भक्ति रंग

प्रभु भक्ति का रंग चढ़ा दो।
मेरा जीवन सफल बना दो।
१. तेरी भक्ति है प्याला।
ऐह तां पीवे कोई कर्मां वाला।
मैंनू प्रेम प्याला पिला दो।। मेरा......
२. तेरी भक्ति में मन को लगाऊं।
सारे दुःख दर्द अपने मिटाऊं।
सत्य ज्ञान की जोत जगा दो।। मेरा......
३. जरे-जरे में है समाया।
तेरा अन्त कहीं भी न पाया।
मेरी बुद्धि को येधा बना दो।। मेरा......
४. अपने हृदय में तुझ को बसाऊं।
रोम-रोम में तुझ को रमाऊं।
प्रभु अपना ही दरश दिखा दो।। मेरा......
प्रभु......................

—०—

महान दर

दाता तेरे द्वारे आया, कोई न खाली जाता है।
कोई न खाली जाता है, सुख शान्ति को पाता है।।

१. तेरा द्वारा बड़ा महान। करता जीवन का कल्यान।
देता सारे ही वरदान। कोई......

२. तेरा द्वारा है महासागर। इसमें भर लूं खाली गागर।
श्रद्धा भक्ति से गुण गाकर।। कोई......

३. तेरा द्वारा है सुख दाई। कर दे सारी दूर बुराई।
काटे मोह माया फाई।। कोई......

४. जिसने पकड़ा तेरा द्वारा।
वह बन गया सभी का प्यारा।।
शुद्ध हृदय में तुझे निहारा।। कोई......
कोई न खाली जाता है। मुंह मांगा फल पाता है।।

—०—

सुन्दर मेला

क्या सुन्दर लगा है मेला। फिर जाना पड़े अकेला।

१. ओ३म् नाम ही गाता आया।
सुन्दर चेहरा मुस्काता आया।।
गुलजार में हस-हस खेला।। फिर......

२. इस मेले की शान निराली।
हर वस्तु है रखने वाली ।।
पर साथ न जाए अकेला ।। फिर……
३. चार दिनों की भरी जवानी।
धन दौलत है आनी जानी ।।
न जाए चेली चेला ।। फिर……
४. छोड़ गये सब राजा रानी।
क्रोधी कपटी और अभिमानी ।।
सब खाए काल अकेला ।। कुछ……
५. इस मेले में खूब नहा ले।
धर्म कर्म की बाढ़ लगा ले ।।
पुष्प कर्मों का भर ले ठेला ।। फिर……
कुछ दिन का लगा है मेला।
फिर जाना पड़े अकेला ।।

—०—

दिव्य दर्शन

प्रभु दिव्य दर्शन हो जाए।
मेरा रोम रोम मुस्काए ।।
१. ऐसी दिव्य ज्योति जाए।
नस नाड़ी में नजर तू आए ।।
मुझ में मधु रस भर जाए ।। मेरा……

२. श्रद्धा प्रेम भरी हो भक्ति ।

शान्त रहूं हो नाम की मस्ती ॥

न विषय विकार सताए ॥ मेरा……

३. सत्य ज्ञान का नूर हो मुझ में ।

अमृत रस भरपूर हो मुझ में ॥

सिर चरनों में झुक जाए ॥ मेरा……

४. मैं मेरी तुझ में रम जाए ।

अन्दर बाहर तू रह जाए ॥

दुनिया का कुछ न आए ॥ मेरा……

प्रभु दिव्य……

—०—

पुकार

तरस रही है आत्मा । कर कृपा परमात्मा ।

मन बुद्धि शुद्ध कर दो मेरी । पापों का हो खातमा ॥

१. लोक लोकान्तर वटक मटक कर ।

सुन्दर चोला पाया है ॥

बचपन खेली मटक मटक कर ।

यौवन होश न आया है ॥ तरस…

२. पांच सहायक हैं जो मेरे ।

मुझ को डाला घेरे में ॥

अन्दर बाहर चार चफेरे ।

रखते मुझे अन्धेरे में ॥ तरस…

३. दुनियाँ देखी सब जग देखा।
कहीं भी चैन न पाया है ॥
निर्धनता और दौलत देखी।
सपने की यह माया है ॥ तरस…

४. ऐसा भाग जगा दो मेरा।
तेरा दर्शन कर लूं मैं ॥
मेरे घट में घर हो तेरा।
दिव्य अमृत को भर लूं मैं ॥ तरस…

—०—

प्रभु ध्यान

हो जाएं बंद आंखें, प्रभु ध्यान करते करते।
अमृत बहाए वाणी, गुण गान करते करते ॥

१. अपना मैं आप खो दूँ, तन की भी सुध रहे ना।
हृदय रिझाए प्रभु को, मधुपान करते करते ॥ हो…

२. सत्य भाव की तरंगें, अन्तराल से ही निकलें।
हो जाए मौन मन भी, तेरा मान करते करते ॥ हो…

३. चित में रहे स्मृति, प्रभु नाम की रटन हो।
हरशाए मेरा अंग अंग नव ज्ञान भरते भरते ॥ हो…

४. दिव्य ज्योति हो निराली, ब्रह्मधाम घर हो मेरा।
जब जाएं प्राण तन से, प्रभु नाम रटते-रटते ॥
हो जाएं बंद आंखें…

—०—

बसन्त

जो सुन्दर सुन्दर फूल हैं ओ३म् ही इसका मूल है।
करुणा हो जाए प्रभु तेरी, कभी न होवे भूल है॥

१. लोक लोकान्तर रचना सारी।
ओ३म् का ही विस्तार है। ओ......
गहरे सागर पर्वत भारी।
कहीं न पाया पार है। कहीं...
क्या सुन्दर......

२. रंग बिरंगे फूल हैं सारे।
सबका मन हरषाते हैं। सब...
चम्पा गैंदा मोती प्यारे।
सबका मन हरषाते हैं। सब...
क्या सुन्दर .....

३. चहूं वेदों की ऋचा ऋचा।
प्रभु तेरी महिमा गा रही। तेरी...
सृष्टि की-सब सत्ता सत्ता।
प्रभु तुझको ही दरशा रही। तुझ...
क्या सुन्दर......

—·०—

पुकार

रो रो करूं पुकार। करुणा कर दो मां।

१. पापों से भरपूर हुई मैं।
कब की तुझ से दूर हुई मैं।
हो कैसे नैया पार॥ करुणा......

२. मोह का बंधन बड़ा है भारी।
चहूं दिश विषयों की अंधयारी।
ना जानूं इसकी सार॥ करुणा......

३. अन्तर वृत्ति टिक न पावे।
ध्यान भजन में चैन न आवे।
है माया का विस्तार॥ करुणा......

४. दिल की गाथा सुन लो मेरी।
ज्योत जगा मां करो न देरी।
बहे अमृत की धार॥ करुणा......

—०—

प्रभु दर्शन

हृदय में रहने वाले। कैसे तुझे निहारूं कैसे।
पापों के दाग काले। कैसे इन्हें उतारूं......

१. ध्यानी तपस्वी योगी। तेरा सोम पान करते।
मोह ममता के हैं जाले। कैसे इन्हें सवारूं॥

२. ब्रह्मांड सारी सृष्टि। तेरी सत्ता से चलती।
सबको चलाने वाले। कैसे तुझे……

३. ज्योति का पुंज सारा। द्यौलोक सारा चमके।
आंधी हटाने वाले। कैसे तुझे……
४. झरना बहा दो मुझ पर। अपनी दया का भगवन्।
अमृत के पीलूं प्याले। फिर तो तुझे निहारूं॥

—०—

भक्ति रंग

प्रभु तेरी भक्ति का रंग है निराला।
अमृत पीवे कोई कर्मां वाला॥
१. भक्ति कर कर जन्म मिला है।
शुभ कर्मों से खूब खिला है।
कैसा सुन्दर अंग अंग बना है यह आला॥ अ…
२. ओ३म् सिमर कर जग में आई।
मोह ममता रही भरमाई।
विषयां विकारां वाला लग गया ताला॥ ……
३. भर भर पीए जिसने प्रेम प्याले।
अन्तर मुख हो के देखे रंग निराले।
चिन्तन से धुल गया मन काला काला॥ ……

४. दया का भंडार तेरा, भक्ति का दान दो।

सारा संसार तेरा, प्रभु वरदान दो।
झुक जाऊं चरनों में कर दो उजाला ।। प्रभु......

—o—

सावन

प्यारा प्यारा सावन आया।
सबके मन का भावन आया ।।

१. घनघोर घटाएं काली काली।
बिजली चमके शान निराली ।। प्यारा...

२. देखो बहनो सावन आया।
सबने मिल त्यौहार मनाया ।। प्यारा...

३. बड़े प्रेम से यज्ञ कराया।
गगन सुगंधि मे भर आया ।। प्यारा...

४. सबने मिल कर खुशी मनाई।
हलवा रोटी प्रेम से खाई ।। प्यारा...

५. दूर दूर से बहनें आईं।
खेली कूदी दौड़ लगाई ।। प्यारा...

६. प्रभु की सुन्दर शान निराली।
कहीं ज्योति कहीं रात है काली ।।
प्यारा............

—o—

विनय

प्रभु मेरे हृदय में आसन हो तेरा।
मेरे रोम रोम में आसन हो तेरा प्रभु ।।

१. वाणी बोलूं प्रभु तेरा गुण गान हो।
मन को धो लूं प्रभु तेरा ही भान हो।
गैरों का न हो मुझमें डेरा प्रभु ।।...

२. मेरी बुद्धि में सत्य विचार भरो।
विषयों के हैं भरे सब विकार हरो।
कहीं कोई भी न होवे अंधेरा प्रभु ।। मेरे...

३. तप संयम की जीवन में हो साधना।
अन्तर् मुख हो करूं तेरी आराधना।
अंग अंग में हो तेरा बसेरा प्रभु ।। मेरे...

४. प्रेम भक्ति का मुझमें भरा नूर हो।
दिव्य ज्योति का अमृत भी भरपूर हो।
झुक जाऊं मैं दर्शन हो तेरा प्रभु ।।...

—०—

प्रभु दर्शन

कृपा कीजे दर्शन दीजे।
प्रभु तेरा दर खटकाया है ।।

प्रभु तेरा दर खटकाया है।
कोई दर नजर न आया है ।।...

१. युग युग से मैं भटकी आई।
कहीं अटकी कहीं लटकी आई।
दुःख पापों से हूं घबराई ।। तेरा...

२. तूं है अजर अमर अविनाशी।
सर्व व्यापक घट घट वासी।
कई जन्मों की मैं हूं प्यासी ।। तेरा...

३. करुणा मय हो करुणा तेरी।
कर दो सारी दूर अंधेरी।
दर्शन दो प्रभु करो न देरी ।। तेरा...

४. जिसने दर तेरा खटकाया।
विनती कर कर के खुलवाया।
उसने परम आनन्द को पाया ।। मैंने...

—०—

कैसे निहारूं

हृदय में रहने वाले। कैसे तुझे निहारूं कैसे।
पापों के दाग काले। कैसे उन्हें उतारूं ।।

१. ध्यानी तपस्वी योगी। तेरा सोम पान करते।
मुझ में हैं मोह के जाले। कैसे इन्हें सवारूं ।।

२. ब्रह्माण्ड सारी सृष्टि। तेरी सत्ता से चलती।
सबको चलाने वाले। कैसे......
३. ज्योति का पुंज तेरा। द्यौलोक सारा चमके।
आंधी हटाने वाले। कैसे......
४. झरना बहा दो मुझ पर। अपनी दया का भगवन्।
अमृत के पी लूं प्याले। घट में तुझे निहारूं॥
हृदय में............

—०—

यज्ञोपवीत

आज कैसी शुभ घड़ी आई है।
खुशियों की बहार लेकर॥
यहां यज्ञ की सुगंधि लाई। देवों का उपहार लेकर।
१. नर नारी भी आए हैं। शुभ कामना को लेकर।
सबके चेहरे मुस्काए हैं। सत्य कामना को लेकर॥
२. स्वामी दीक्षानन्द जी का कितना उपकार है।
वेदाज्ञा बताकर कितने बच्चों को किया त्यौर है॥
३. ऋषियों की पद्धति से यज्ञोपवीत पहना।
हीरे मोती सोने से बढ़कर। अनमोल है यह गहना॥
४. प्यारे बच्चो यह धागे तीन न समझो।
कुछ रहस्य भरा है इसमें।
सेवा के अंकुर उपजो। सब हर्ष भरा है इसमें॥

५. यज्ञोपवीत पावन। पावन बनाए तुमको।
मन बुद्धि में भरे अमृत। सत्य पर चलाए तुमको॥
६. ज्ञान कर्म उपासना से। शिखर पर चढ़ते जाओ तुम।
प्रभु की आराधना से। जगत में नाम पाओगे तुम॥
७. सफल होगा तुम्हारा जीवन।
विद्या ज्ञान को पाकर।
उज्ज्वल होगा तुम्हारा तन मन।
सच्चे वरदान को पाकर॥
८. आज आप सबको बहुत बहुत वधाई हो।
अग्नि होत्री परिवार की।
सबकी सफल कमाई हो।
वृति बनी रहे पर उपकार की॥
आज कैसी शुभ घड़ी आई है।

—०—

तीज-त्यौहार

तीजों का त्यौहार। सावन आया है॥
फूलों की बहार। सावन आया है॥
१. कृष्णा जी कौशल्या आई। आई है प्रकाश।
शान्ति सत्या सावित्री आई। प्रभु पर हो विश्वास॥
सावन............

२. कैसा सुन्दर यज्ञ रचाया। सुगंधि खूब फैलाई।
मीठे स्वर से प्रभु गुण गाया। सुन्दर आभा लाई।।
सावन............

३. घन घोर घटाएं काली काली। बादल शोर मचावे।
रिम झिम वर्षा बड़ी निराली। मोर पपिहा गावें।।
सावन............

४. आओ बहनो खुशी मनावें। मिल मिल झूला झूलें।
दुविधा दूई सभी हटावें। ईश्वर को न भूलें।।
सावन............

—०—

वेद उपदेश

सुन ले वेदों के उपदेश। जीवन सफल करे।
जीवन सफल करे। हृदय निर्मल करे।।

१. वेद प्रभु की अमृत बानी। कहते हैं सब ज्ञानी ध्यानी।
रखना इसको याद हमेशा।। जीवन...

२. ऋषि चार हुए महान। अन्तर मुख हो किया ध्यान।
रहस्य बताया है विशेष।। जीवन...

३. आदि अन्त का वेद में ज्ञान। सृष्टि का सारा विज्ञान।
कन कन में है सत्य उपदेश।। जीवन...

४. ऋचा ऋचा में है परमेश्वर।
श्रद्धा भक्ति प्रेम को लेकर।
दिव्य ज्योति को अन्दर देख।...

५. मार्ग वेद का अपनाएं।
भय भ्रांति सब भ्रम हटाएं।
यही है ईश्वर का आदेश।...

—०—

भैय्या दूज

अद्भुत मस्तक भैय्या। भर ले सत्य विचार।
भर ले सत्य विचार। लेकर भक्ति की धार॥

१. मस्तक कितना अनमोल। इसमें भक्ति रस घोल।
हीरा जन्म न रोल। भर...

२. दिव्य ज्योति जगावो। भय भ्रम भ्रांति हटावो।
नई नई अनुभूति पावो। भर...

३. तिलक लगाया है केसर का।
ध्यान रहे परमेश्वर का।
स्थान रहे ब्रह्मधाम के घर का। भर...

४. संयम तप साधन हो योग।
विषयों का करो निरोध।
दूर रहें शोक व रोग॥ भर...

—०—

कन्या के लिए

मेरी प्यारी बेटी। कर ले सच्चा श्रृंगार ।।
कर ले सच्चा श्रृंगार। भर ले सुन्दर विचार ।।

१. देवी बनकर तूं आई। आम शिक्षा है पाई।
करना दूर बुराई तज कर सारे विकार ।।...

२. अनमोल पहनी तूं गहना। वेद विद्या का गहना।
सत्य के पथ पर ही चलना ।। कर...

३. गृहस्थ आश्रम है उत्तम। बुद्धि रखना पवित्र।
मधु रस का हो अमृत। करना सबका संवार ।।...

४. सच्चा प्रेम हो भारी। सबकी बनकर हितकारी।
प्रभु भक्ति हो न्यारी। पति की हो आज्ञाकारी ।।...

५. ऐसा जीवन बनाओ। सच्चा यश कमाओ।
दुर्गुण दूर हटाओ। करना ईश्वर से प्यार ।।...

६. गायत्री मां से वर पालो। सुख शान्ति से भर जावो।
तीनों ताप मिटावो। पहुंचो ब्रह्म के द्वार ।।...

—०—

जीव अकेला

जगत में आया जीव अकेला।

१. ओ३म् सिमर कर जग में आया।
कर्म किए सो वही फल पाया ।।
शिशु बन कर के खेला ।। जब...

२. मां का प्यार कुटुंब की खुशियां।
मौज़ बहार सभी रंग रलियां।।
मटक रहा अलबेला।। जगत्...
३. यौबन शक्ति धन की मस्ती।
बिन भक्ति के ऐश परस्ती।।
मोह जाल का भारी झमेला।। जगत...
४. हीरे लुटा दिन रात गुजारी।
प्रभु मिलन की ज़रा न त्यारी।।
बीता अमृत वेला।। जगत्...

—०—

यज्ञ करें

आओ मिल कर यज्ञ करें। नर नारी सब यज्ञ करें।
प्यारी बहनो यज्ञ करें। मन बुद्धि को शुद्ध करें।।
१. हीरा मानव नर तन पाया।
प्रातः समय सुहाना आया।
सबने मिलकर प्रभु गुण गाया।
बड़े प्रेम से यज्ञ करें।।
२. प्रभु आश्रित की है फुलवारी।
दूर से आएं हैं नर नारी।।
होगी यज्ञ की शोभा न्यारी।
तन मन धन से यज्ञ करें।।

३. साधु सन्त महान आए।

वेदों के विद्वान आए॥
श्रद्धा भक्ति लेकर आए।
सत्य भाव से यज्ञ करें॥

४. जीवन का आधार ही यज्ञ है।
मानवता का सार ही यज्ञ है॥
पर उपकार का साधन यज्ञ है।
घर घर अन्दर यज्ञ करें॥

५. वृत्ति इधर उधर न जावे।
दिव्य ज्योति से मन हरशावे॥
दुविधा दूई सभी हटावे।
मन अपने को शुद्ध करे॥

६. यज्ञ से वुद्धि योग बनाएं।
अन्तर मुख हो ध्यान लगाएं॥
नित नित नई अनुभूति पाएं।
सीस झुका कर यज्ञ करें॥

—०—

प्रभु मिलन

प्रभु तेरे मिलने को, कहो कैसा भजन करूं।
मन के बदलने को कहो कैसा मनन करूं।

१. निर्बल हूं मैं नहीं है शक्ति।

संयम साधन नहीं है भक्ति।

बुद्धि शुद्ध करने को। कहो कैसा चिंतन करूं।

२. मन है मैला घोर अंधेरा।

दाग कसैला विषयों का डेरा।

दिव्य ज्योति जगने को। कहो कैसा यतन करूं।

३. वृत्ति अन्दर ठहर न पावे।

सकल वासनाएं मन घबरावे।

प्रभु दर्शन करने को कहो कैसा वंदन करूं॥...

४. शान्ति के पुञ्ज प्रभु झरना बहा दो।

युग युग की लगी प्यास बुझा दो।

प्रभु अर्पण करने को। कहो कैसा नमन करूं।

—०—

वेद-खजाना

वेद का खजाना देखो सबसे महान है।

सब सत्य विद्या की अद्भुत खान है॥

१. निराकार निर्विकार प्रभु की यह वाणी है।

वेद में है सब विस्तार कहते ज्ञानी ध्यानी हैं।

वेद रहस्य जाना देखो सब...

२. जिसने श्रद्धा प्रेम से वेद को अपनाया है।
भक्ति भाव चिन्तन से ही नया ज्ञान पाया है।
सत्य पथ माना देखो सबसे महान···

३. आदि सृष्टि अन्त का वेद में ही ज्ञान है।
ऋचा ऋचा अक्षर अक्षर ईश्वर का वरदान है।
बुद्धि से ही जाना देखो सबसे महान···

४. लोक परलोक निधि वेद से ही पाए हम।
अन्तर मुख होके दिव्य ज्योति को जगाए हम।
प्रभु को पहचाना देखो॥ सब···

—०—

मेला

कुछ दिन का लगा है मेला।
फिर जाना पड़े अकेला॥

१. ओ३म् नाम को गाता आया।
सुन्दर चेहरा मुस्काता आया।
गुलजार में हस हस खेला॥ फिर···

२. चार दिनों भरी जवानी।
धन दुनियां है आनी जानी।
न जाए चेली चेला। कुछ···

३. इस मेले की शान निराली।

हर वस्तु है रखने वाली।
पर साथ न जाए अकेला। फिर...

४. छोड़ गये सब राजा रानी।
क्रोधी कपटी और अभिमानी।
पकड़े काल अकेला। कुछ...

५. इस मेले में खूब नहाले।
धर्म कर्म की बाढ़ लगाले।
शुभ कर्मों का भर ले ठेला॥ फिर...

६. इस मेले में खूब विचर ले।
नाम रतन की सम्पदा भर ले।
मोह का टूटे झमेला॥ फिर......

—०—

प्रभु रचना

प्रभु जी कारीगरी। सुन्दर पत्ता पत्ता।
रचना न्यारी तेरी। कहती तेरी सत्ता।

१. महिमा तेरी दरशावे।
फिर तू नजर न आवे।
सृष्टि सारी चलावे॥ सुन्दर...

२. तेरी शान निराली।
चमके उषा की लाली।
सारे जग दा तू वाली॥ सुन्दर...

३. घने घने हैं जंगल।
पल में कर दे तू थल जल।
ज्योति तेरी है निर्मल॥ सुन्दर...

४. करुणा हस्त पसार।
तेरे भरे भण्डार।
खोलो अपना ही द्वार॥ सुन्दर...

—०—

ज्योति

अन्तः करण में जगा ले ज्योति।
परम पिता का दीदार होगा॥
सच्ची लगन हो बढ़ा ले प्रीती॥...

१. कण कण में रहता समाया सबमें।
फूलों में हँसता, चमकता नभ में।
मन में उसकी बसा ले हस्ती॥...

२. वह रक्षा करता न देर लावे।
पल में भक्तों के कष्ट हटावे।
समझ ले उसकी है कितनी हस्ती॥...

३. दूई दुविधा को दूर कर ले।
श्रद्धा भक्ति का नूर भर ले।
करुणा उसकी सदा बरसती ॥…

४. तीनों बंधन छुड़ा दो मेरे।
न भटकी रहूं मैं सदा अंधेरे।
ब्रह्मधाम घर की बता दो भक्ति ॥…

—०—

प्रभु रंग

मां अपने रंग में रंग दो।
इक बार जरा मुझे रंग दो ॥

१. ऐसा रंग दो कभी न उतरे।
ज्यों ज्यों धोऊं त्यों त्यों निखरे।
सच्ची प्रेम उमंग दो ॥ मां…

२. महा पुरुषों ने जो रंग रंगिया।
मैंने भी तुझसे यही रंग मंगिया।
मेरे पाप सभी कर भंग दे ॥ मां…

३. प्रभु तेरे रंग की शान निराली।
धुल जाए मन की नगरी काली।
सारी दुनिया कर दंग दे ॥ मां…

४. सोमामृत का पान करा दो।
अन्तर मुख का ध्यान बता दो।
दिव्य ज्योतिअपनी निसंग दो।। मां...

—०—

दर्शन

इक बार दे दो दर्शन। जीवन सफल हो जाए।
तन मन बने यह कुंदन। हृदय कमल हो जाए।।

१. नस नस की मैल सारी। धो दो प्रभु जी अब तो।
पल पल तेरा हो सिमरन।। जी...

२. कोई वासना रहे न। अमृत की धारा भर दो।
करुणा हो तेरी भगवन्।। जी...

३. श्रद्धा व प्रेम से हो। सच्ची लगन से भक्ति।
हर स्वास में हो चिन्तन।। जी...

४. ब्रह्मधाम घर हो मेरा। दिव्य ज्योति को जगा दो।
हो जाऊं तेरे अर्पण।। जी...

—०—

मां मेरी कर दे कृपा। तेरे दर पर आए हैं।
तेरे दर पर आए हैं। पापों से घबराए हैं।

१. तुझसा कोई नजर न आवे।

जो मन की मैल हटावे।

बुद्धि को शुद्ध बनावे॥ तेरे...

२. तू सबकी है हितकारी।

तेरी महिमा है बड़ी भारी।

मां भक्ति भर दे न्यारी॥ तेरे...

३. सब किल्विश दूर भगा दो।

सत्य ज्ञान की ज्योत जगा दो।

भय भ्रान्ति भ्रम मिटा दो॥ तेरे...

४. मां सच्चा प्यार बढ़ा दो।

अमृत की धार बहा दो।

मुक्ति का मार्ग बता दो॥ तेरे...

—०—

प्रभु दया

दयालु भगवन दया करो तुम।

ऐसा सच्चा प्यार दे दो॥

दुनिया की दौलत भला मिले न।

अपना सच्चा प्यार दे दो॥

१. कभी मिला था बड़ा खजाना।

कभी न रोटी मिली न दाना॥

फिरा कहां कहां जंगल विराना।

दया करो शुद्ध विचार दे दो ।।

२. प्रेम सागर था धाम मेरा।
विनती करना था काम मेरा ।।
स्वासों में रहता था नाम तेरा ।। ऐसा…

३. विषयों ने ऐसा फंदा लगाया।
बीते युग युग न होश आया ।।
जाल मोह का बड़ा फैलाया।
अब तो अपना आधार दे दो ।।

४. दया हो तेरी न रहे अंधेरी।
जगा दो ज्योति करो न देरी ।।
पाऊं दर्शन न मैं हो मेरी ।। ऐसा…

—०—

भक्ति का नूर

प्रभु जी श्रद्धा और भक्ति का नूर भर दो।
दिव्य ज्योति प्यारी प्यारी भरपूर कर दो ।।

१. ऐसी ज्योति जगे निराली।
धुल जाए मन की नगरी काली।
सारी सृष्टि दा तू वाली ।। भरपूर…

२. अन्तर मुख हो तेरा ध्यान।
सोमामृत का दे दो दान।
करुणा हो मिले ब्रह्म ज्ञान।। भरपूर...

३. तुझ में लीन मगन हो जाऊं।
नई नई दात सदा मैं पाऊं।
कई जन्मों की प्यास बुझाऊं।। भरपूर...

—०—

सतसंग

सतसंग विच अमृत बरसे।
आओ नैय्या पार कर लें।
ज्योति जग जाए आत्मा न तरसे। आ...

१. पाप संताप सब दूर हो जांदे।
हो निश्पाप नहीं विषय संतादे।
हर पल पल सोम रस बरसे।। आ...

२. सतसंग विच इक रश्मि आवे।
जन्म जन्म के पाप मिटावे।
अंग अंग सारा खुशी विच हरशे।। आ...

३. दिव्य रत्नों का भंडार है सतसंग।
अन्तः वृति का सार है सतसंग।
ब्रह्मधाम की धारा बरसे।। आ...

४. आत्म दर्शन का साधन सतसंग।

प्रभु दर्शन का चिन्तन सतसंग।

आनन्द पावे कई अरसे॥ आ...

—०—

योगीराज जी को श्रद्धांजली

हो मेरा प्रणाम गुरुवर। हो सबका प्रणाम।

१. दो कर जोड़ के वंदना करते।

श्री चरनों में सीस हैं धरते।

योगी बड़े महान॥ गुरु...

२. प्रभु आश्रित के महाराज भी थे तुम।

हम सबके सरताज भी थे तुम।

परम पूज्य गुणवान॥ गुरु...

३. देश विदेश में योग सिखा कर।

वेदों का संदेश सुना कर।

भारत की बढ़ाई शान॥ गुरु...

४. अमृत पान कराते थे तुम।

प्रेम सुधा बरसाते थे तुम।

देते थे ब्रह्मज्ञान गुरुवर...

५. जीवन ज्योत जगाने वाले।

मन की मैल मिटाने वाले।

करते दूर अज्ञान॥ गुरु...

६. अब श्रद्धा के पुष्प सजा कर।

दो नयनों के दीप जगाकर।

प्रेम के पुंज महान॥ गुरु...

७. जन्म जन्म की मैल हटाते।

सत्य ज्ञान की ज्योत जगाते।

करते सबका कल्याण॥ गुरु...

८. गुरुवर तेरा नाम रहेगा।

अमर सदा तेरा काम रहेगा।

पहुंच गये ब्रह्मधाम॥ गुरु...

—०—

सुन्दर शरीर

सुन्दर शरीर तेरा। थोड़ी सी राख हो गई।

१. थोड़ी सी राख हो गई। जल करके खाक हो गई।

सब कुछ था कहता मेरा॥ थोड़ी...

२. जिसको सजाता था नित।

साबन लगाता था नित।

पलंग बिछाता था नित॥ थोड़ी...

३. सारे थे प्यार करते। हंस हंस के दिल को भरते।

मीठे पकवान रखते॥ थोड़ी...

४. यौवन में धन बल पाया। विषयों ने डेरा लाया।

वैयदा न याद आया॥ थोड़ी...

५. हीरा अनमोल मिलिया ।

बिन भक्ति उठ के चलिया ।

मेंवे मिठाइयां पलिया ।। थोड़ी...

६. मनवा जो बीती बीती । कर ले तू प्रभु से प्रीती ।

नाम की चढ़ जाए ।। मस्ती थोड़ी...

—०—

पू० ब्रह्म शक्ति माता जी

हे ब्रह्म शक्ति माता । तुझको लाखों प्रणाम ।। तुझ...

तुझ सा कोई नजर न आता ।। तुझ..

१. ब्रह्मलोक से तू आई ।

तप कर कर के शिक्षा पाई ।

गुरुकुल की प्रथा चलाई ।। तुझ...

२. तेरे प्यार का ढंग निराला ।

शक्ति का करती उजियाला ।

मीठी बाणी प्रेम प्याला ।। तुझ...

३. सबको शिक्षा दे बढ़ाया ।

धर्म कर्म का बीज उगाया ।

गायत्री यज्ञ में प्रेम बढ़ाया ।। तुझ...

४. स्नेह से ऐसा प्यार दिया था ।

ज्ञान से पर उपकार किया था ।

सबसे सत्य व्यवहार किया था ।। तुझ...

५. साधना संयम शिविर लगाए।

दुर्गुण अवगुण दूर हटाए।

मन में सुख शान्ति भर आए।। तुझ···

६. यज्ञ कर के याद मनाई।

सुगन्धि गगन मंडल भर आई।

हम श्रद्धा के फूल हैं लाई।। तुझ···

७. बनी रहेगी मां तेरी याद।

गुरुकुल रहे सदा आबाद।

सबको देना आशीर्वाद।। तुझ···

८. हंसती चलती गई ब्रह्मधाम।

जीवन में कर पूरे काम।

दिलों में रहेगा तेरा नाम।। तुझ···

हे ब्रह्म शक्ति···

—०—

विनय

प्रभु भक्त प्यारे पार उतर गये।

मैं रह गई अंधियारे।। प्रभु···

१. जप तप संयम साधन करके।

अन्तर मुख हो वंदन करके।

देखे दृष्य न्यारे।। प्रभु···

२. दिव्य ज्योति ने आनन्द लाया।
अंग अंग में प्रभु दर्शन पाया।
लेकर प्रेम हुल्लारे ॥ प्रभु...
३. कई जन्मों से दूर हुई मैं। पापों से भरपूर हुई मैं।
दुःख संकट भोगे भारे ॥ प्रभु...
४. विषयों ने मुझको ऐसा जकड़ा।
माया ने कस करके पकड़ा।
न भजन किया तेरे द्वारे ॥ प्रभु...
५. इक बार दया की कर दो वृष्टि।
योग में देखूं तेरी सृष्टि।
पहुंचू ब्रह्म के द्वार ॥ प्रभु...

—०—

करुणा

करुणा कर दो मेरे दाता। अन्तर मुख हो जाऊं मैं।
१. अन्तर मुख हो जाऊं मैं। शान्ति सुख को पाऊं मैं।
तुझसा कोई नजर न आता ॥ अन्तर...
२. दुनिया देखी रंग बिरंगी। सच्चा कोई न साथी संगी।
स्वार्थ भरा है चाल बढ़ेंगी ॥ अन्तर...
३. तूने अन्दर भरे भंडार। विरला जाने इसकी सार।
मुझमें भर दो सत्य विचार ॥ अन्तर...

४. ऐसी अन्तर मुख हो जाऊं।

दुनिया की सब होश भुलाऊं।

तेरे परम आनन्द को पाऊं।। अन्तर...

५. तेरी शक्ति हो भरपूर।

भक्ति का भर दो प्रभु नूर।

दुर्वृति हो चकना चूर।। अन्तर...

—०—

पुकार

हे नाथ सुन लो मेरी। झरना बहा दो अपना।। झ...

दुनिया में खूब देखा। सब जग है एक सपना।। स...

१. कब से चली न जाने। अब तक न पहुंची पथ पर।

कहीं पर न चैन पाया। दुःख सुख रहा भुगतना।।

२. तन मन व धन को देकर। कितने बनाए नाते।

हीरे लुटाए सारे। न बैठ ओ३म् जपना।। न...

३. विषयों ने डाला घेरा। अहंकार ने पछाड़ा।

माया का जाल पक्का। चहूं ओर ही था फंसना।। चहूं...

४. बस एक ही है इच्छा।

अमृत पिला दो मुझको।

दिव्य ज्योति हो निहारूं।

शुद्ध प्रेम हो छलकना।। शुद्ध...

हे नाथ............

—०—

दिव्य रस

खोलो मेरे मन का द्वार। प्रभु जी दिव्य रस भर दो।
करुणा हाथ पसार। प्रभु जी मधुर रस भर दो।

१. अमृत ऐसा उज्ज्वल भर दो।
अन्तःकरण मेरा निर्मल कर दो।
बहे आनन्द फुहार।। प्र...

२. ऐसा मधु रस हो सुखदाई।
विषयों की न रहे बुराई।
हो भक्ति की धार।। प्र...

३. मन मन्दिर में सत्य ज्ञान हो।
हो अन्तर मुख प्रभु भान हो।
हर्ष भरी हो गुजार।। प्र...

४. सन्मुख हो प्रभु ज्योति निराली।
नया ज्ञान बरसाने वाली।
नमः हो बारम्बार।। प्र...

—०—

प्रेम नगर

प्रेम नगर में बसाऊंगी घर मैं। तज के सब परिवार।

१. प्रेम सखा हो प्रेम पड़ोसी। प्रेम ही सुख का सार।

२. प्रेम की छत हो प्रेम का आंगन। प्रेम के चारों द्वार।

३. प्रेम की खिड़की प्रेम झरोखे । चहूं दिश प्रेम फुहार ।
४. प्रेम ही बरसे चारों तरफ से । हो प्रेम की अमृत धार ।
५. प्रेम की नदियां जी भर नाहूं । हो सच्चे प्रेम की तार ।
६. शील सन्तोश की पहनूं साड़ी ।
धीरज हो कंठ का हार ।
७. अनहद नाद का कुंडल होवे ।
हृदय में ओ३म् झंकार ।
८. नैनों में हो नाम की मस्ती ।
खुल जाए ब्रह्म द्वार ।
९. प्राण अपान का झूला लेकर ।
जड़ जाए प्रेम की तारा ।
१०. दिव्य ज्योति हो प्रभु निहारूं । नमः हो बारम्बार ।
११. सत्य ज्ञान हो अन्दर ध्यान हो । फूटे मधु की धार ।
१२. सच्ची लगन से प्रभु गुण गाकर । पाऊं आनन्द अपार ।
१३. शोक मोह न मुझे सतावे । कहीं न रहे अहंकार ।
१४. प्रेम की श्रद्धा प्रेम का निश्चय । प्रेम के भरे भण्डार ।
१५. प्रेम का दीपक प्रेम की बाती ।
प्रेम की झलक अपार ।
१६. मैं मेरी सब अर्पन कर दूं । प्रभु का पाऊं दिदार ।
प्रेम नगर............

—०—

कन्या का नामकरण

इस घर में नन्ही बाला आई है।
खुशियों की बहार लेकर।
दिव्य गुण भी साथ लाई है।
सुगन्धि आहार लेकर।

१. आत्मा तो है पवित्र। मन बुद्धि भी है निर्मल।
अंग अंग में मधु अमृत। हृदय भी है बड़ा कोमल ।।

२. यहां यज्ञ भी रचाया है।
गणन में दिव्य गंध भर आया है।
देवी का नाम रखाया है।
यहां पुरुषों की छत्रछाया है।

३. जय यज्ञ सतसंग का नित सोमपान करेगी।
प्रभाव होगा भक्ति रंग का।
नित वेद बाणी का गुण गान करेगी।

४. चांद की तरह दिन दिन बढ़ती जाए।
फूल जैसी सब के मन भाए।
सब कार्यों में कुशल बन कर।
देवी एक महान बने यह।
दुर्गा लक्ष्मी सी वीर बन कर।
सारे कुल की शान बने यह ।।

५. मधुर बाणी से हो वर्चस्वी ।
सत्य ज्योति से हो तेजस्वी ।
ओ३म् नाम की सदा हो मस्ती ।
श्रद्धा प्रेम से करके भक्ति ।।
६. धर्म कर्म में शोभा पाए ।
वैर विकार न मन में लाए ।
चिन्तन से नित ज्ञान बढ़ाए ।
अन्तर मुख हो ध्यान लगाए ।।
७. आप सबको बहुत बधाई हो ।
अग्नि होत्री परिवार की ।
सत्य न्याय की कमाई हो ।
सदा वृति बनी रहे उपकार की ।।

—०—

श्रद्धांजली

पल पल याद आती है । प्रभु आश्रित । प्रभु आश्रित ।
नैनों में आंसू भर लाती है ।। प्रभु...
१. गरीबी में गया बचपन । यौवन में न धन पाया ।
दया की धार बह जाती ।। प्रभु...
२. मां ने पाला हित मित से । प्रभु का आसरा लेकर ।
भजन भी गाए दिन राती ।। प्रभु...

३. संभाला अपने को जब ही। गायत्री यज्ञ को अपनाया।

दिव्य ज्योति ही जग जाती ॥ प्रभु···

४. नमः का झरना लेकर के। किया प्रचार वेदों का।
सुगन्धि घर घर से ही आती ॥ प्रभु···

५. सुना वेदों के ही उपदेश। छुड़ाया सबके दोषों को।
मधुरता भर भर के आती ॥ प्रभु···

६. यज्ञ गायत्री का रहस्य जाना।
किया प्रवेश योगास्थल में।
नई नई अनुभूति नित आती ॥ प्रभु···

७. किया था प्यार सबसे ही। बने सबके प्यारे वह।
सच्चा ईश्वर के विश्वासी ॥ प्रभु···

८. साधन ध्यान तप करके। प्रभु की दात को पाया।
ध्वनि ओ३म् की आती ॥ प्रभु···

९. तेरी आज्ञा को माने हम। सफल जीवन बने सबका।
दो कर जोड़ झुक जाती ॥ प्रभु···

—०—

समर्पण

मैं खोदूं अपना आप प्रभु जी तेरे चरणों में।

१. चरण कमल प्रभु हैं सुख दाई।
झुक जाऊं न रहे बुराई॥
जीवन हो निश्पाप ॥ प्रभु···

२. श्रद्धा प्रेम भरी हो भक्ति।

मगन रहूं हो नाम की मस्ती ॥
मिट जाएं तीनों ताप ॥ प्रभु…
३. अंतर मुख हो करूँ साधना।
तनमय हो प्रभु तेरी आराधना ॥
सुनुं मधुर आलाप ॥ तेरे…
४. अंदर बाहर तुझे निहारूं।
शुद्ध हृदय हो सब कुछ पाऊं ॥
हर्ष भरा हो मिलाप ॥ प्रभु…

—०—

प्रणाम

प्रभु शरण में तेरी आई हूं।
प्रणाम मेरा स्वीकार करो।
श्रद्धा के फूल भी लाई हूँ। प्रणाम…
१. घनघोर अंधेरा छाया है।
मोह माया ने भरमाया है।
मन शुद्ध मेरा इक बार करो ॥ प्रणाम…
२. नैय्या मेरी मंझधार में है।
बिनती तेरे दरबार में है।
कर कृपा भव से पार करो ॥ प्रणाम…

३. मन बचन कर्म हो इक मेरा।

छोड़ूं न आंचल मां तेरा।
गोदी में बिठा मुझे प्यार करो॥ प्रभु...

—०—

सहारा

मेरे प्रभु मुझ को देना सहारा।
कहीं छूट जाए न आंचल तुम्हारा॥
१. तेरे सिवा मन में कोई न आवे।
प्रेम का दीपक बुझने न पावे॥
घट में बसो मेरे नैनों का तारा॥ कहीं...
२. इशारों से मुझ को बुलाती है दुनियाँ।
तेरे रास्ते से हटाती है दुनियाँ॥
कृपा करो समझूं तेरा इशारा॥ कहीं...
३. तेरी दया को मैं हर क्षण निहारूं।
तेरे ही दर पर मैं झोली पसारूं।
चढ़ जाए भक्ति का रंग न्यारा॥ कहीं...
४. तेरा ही सिमरन तेरा भजन हो।
तेरा ही चिन्तन तेरा कथन हो॥
तेरा ही घर होवे ब्रह्म द्वारा॥ कहीं...

—०—

वेद महिमा

कण-२ में भगवान है। वेद प्रभु का ज्ञान है।
पढ़ सुन कर जो धारण करता।
उसका ही कल्याण है।

१. वेद प्रभु की अमृत वाणी।
श्रद्धा से जो गाएगा।। श्रद्धा...
मन चित से जो ग्रहण करेगा।
ज्ञान की ज्योत जगाएगा।।
ईश्वर का वरदान है। वेद

२. वेद का पढ़ना परम धर्म है।
ऋषियों ने फरमाया है।।
यज्ञ का करना श्रेष्ठ कर्म है।
बेदों ने बतलाया है।।
दुर होवे अज्ञान है। वेद...

३. शुद्ध और निर्मल बाणी से।
जो ग्रन्थों का विचार करे।।
दुर्गुण अवगुण दूर होवे।
सब बुद्धि का विस्तार करे।।
बन जाए यूँ महान है। वेद...

४. वेदानुसार बनाए जीवन।

मन मंदिर ज्योत जगाएगा ।।

तन मन धन हो प्रभु के अर्पण।

उत्तम पदवी पाएगा ।।

पावे शुद्ध ब्रह्म ज्ञान है। वेद…

—०—

चिन्ता मेरी

जगत में चिन्ता मिटी है उस की।

जो तेरे चरणों में आ झुके हैं।

वही हमेशा हरे भरे हैं।। जो…

१. न पाया तुझ को अमीर बन कर।

न पाया तुझ को फकीर बन कर।

वही परम पद को पा गये हैं। जो…

२. न पाया तुझ को किसी ने बल से।

न पाया तुझ को किसी ने छल से।

उसी को तेरे हुए हैं दर्शन। जो…

३. किसी ने पत्थर प्रभु बनाए।

कोई भटकते हैं तीर्थों पर।

उसी का जीवन सफल है भगवन।

जो तेरे चरणों में आ झुके हैं।

—०—

जीवन का लाभ

सुन ले वृति ध्यान लगा ।
इस जीवन का लाभ उठा ।।

१. प्रातः समय प्रभु चिन्तन करके ।
शीश प्रभु चरणन में धरके ।।
अपने सारे दोष मिटा ।। इस...

२. अन्तर मुख हो ध्यान लगा ले ।
घट के अन्दर ज्योत जगा लें ।।
नित ही प्रेम सुधा रस पा ।। इस...

३. साथ पथ की तू बन जा राही ।
ओ३म् है तेरा अन्त सहाई ।।
मोह ममता का जाल छुड़ा ।। इस...

४. परम धाम बस घर हो तेरा ।
ओ३म् नाम इक जर हो तेरा ।।
जनम मरन दा कष्ट हटा ।। इस...

—०—

तू भंडारी

तू भंडारी मैं पुजारी । सर्व सुखों के दाता ।
तेरा मेरा सच्चा नाता । फिर क्यों नजर न आता ।।

१. सारे जग दा तू है वाली, मैं भी तेरी दुखी हां।
अद्भुत महिमा शान निराली,
भूली तुझसे बिछड़ी हां ॥
तू निर्विकारी मैं अहंकारी ॥ सब…
२. अमृत का है सागर तेरा, भागां वाले पान करें।
मेरे मन में घोर अन्धेरा, योगी तेरा ध्यान करें ॥
तू उपकारी मैं अवगुण हारी ॥ सर्व…
३. अद्भुत है संसार बनाया, तुझको जान न पाऊं मैं।
व्यापक है पर नजर न आया,
दिव्य नैन कहां से लाऊं मैं ॥
तू करुणाकारी मैं मोह की मारी ॥ सर्व…
४. कष्ट उठाकर धक्के खाकर। शरण में आई हां तेरी।
अभी दयाकर झुके मेरा सर। ज्योत जगा दे तू मेरी ॥
तेरी महिमा भारी। मैं संसारी ॥…

—०—

मेरी मैं

इक बार आओ भगवन।
मेरी मैं नहीं रहेगी ॥
१. मेरी मैं का भारी बंधन।
पल पल में है गिराता ॥
दुई हटाओ भगवन ॥ मेरी…

२. सदियां गुजर गई हैं।
तुझको न पाया भगवन ॥
करुणा दिखाओ भगवन ॥ मेरी···

३. घट में हो तेरा आसन।
मुझ पे हो तेरा शासन ॥
अमृत पिलाओ भगवन ॥ मेरी···

—०—

ओं से प्रीति लगा

अभी तो जगाया अभी फिर सो गया।
उठ परदेसी तेरा वक्त हो गया ॥

१. अरे परदेसियां दी ऐहो है निशानी।
आए और चले गये खतम कहानी ॥
कोई गया हसके तो कोई रो गया ॥ उठ··

२. अपना सामान सारा, ले ले संभाल के।
जन्म अनमोल हीरा जांवी न तू गाल के ॥
फिर मत कहना मेरा माल खो गया ॥ उठ···

३. कई बार आया है तू इस जहान पर।
खोल आंखें देख तेरी याद है कहां पर ॥
बोझ अभिमान का तू बड़ा हो गया ॥ उठ···

४. गुजर गई [illegible] अगली बना ले।
ओ३म् है साथी तेरा प्रीत लगा ले।।
भक्ति का रंग रंग प्रातः हो गया।। उठ...

—०—

तेरा नाम

हे करुणा मय दया निधान।
कभी न भूलूं तेरा नाम।।

१. स्वांस स्वांस हो तेरा सिमरन।
पल पल हो प्रभु तेरा चिन्तन।।
मुझको दे दो यह वरदान।। कभी...

२. दुःख में तुझको याद करूं मैं।
सुख में चरनी सीस धरूं मैं।।
तुझको ध्याऊं आठों याम।। कभी...

३. रोम रोम में तुझे निहारूं।
शुद्ध हृदय हो ओ३म् उच्चारूं।।
रचना देख करूं प्रणाम।। कभी...

४. घट में पाऊं दर्शन तेरा।
लख चौरासी न हो फेरा।।
पहुंचु तेरे ब्रह्म के धाम।। कभी...

—०—

जन्म जन्म की भटकाई

मैं जन्म जन्म की भटकाई।
न चैन मिला न मुस्काई॥

१. घन घोर घटाएं पापों की।
बे अन्त चिताएं तापों की॥
मोह ममता की आंधी छाई॥ न...

२. युग युग बीते मर मर जी कर।
न पुण्यं कीते खापी सोकर॥
कोई बिगड़ी बात न बन पाई॥ न...

३. जिस जिस को मैंने अपना किया।
उस उसने मुझको धोखा दिया।
सब रिश्ते स्वार्थ के भाई॥ न...

४. तुच्छ विनय प्रभु स्वीकार करो।
कर कृपा भव से पार करो॥
सब छोड़ तेरे दर पर आई॥ न...

—०—

प्रभु रचना

प्रभु देख देख तेरी रचना, वारी जावां।
सब रंग में तेरा बसना, पार न पावां॥

१. पर्वत से जल झरने आवें।
कलं कल करें तुझे दरशावें॥
सुन्दर फूलों में हंसना॥ वारी...

२. हरे ऊंचे क्या वृक्ष खड़े हैं।
डाल में फल जड़े हैं॥
मीठा मीठा फल चखना॥ वारी...

३. पत्ते पत्ते में तेरी शक्ति।
भारी पर्वत तेरी हस्ती॥
सूरज का खूब चमकना॥ वारी...

४. कारीगर तू बड़ा निराला।
सब जग में तेरा उजियाला॥
गुण गा न जाने रसना॥ वारी...

—०—

किस विधि उतरेगा पार

किस विधि उतरेगा पार मनवा।
हीरा जन्म तूने व्यर्थ गंवाया॥

१. लख चौरासी भोग के आया।
पुण्यं कर्मों से नर तन पाया॥
बीते वर्ष हजार॥ मनवा...

२. अपनी कमाई दी खर्च न पल्ले।
अन्त समय तेरी पेश न चल्ले ॥
रोवेगा जारो जार ॥ मनवा...
३. मात पिता भाई मित्र सारे।
महल खजाने पुत्र प्यारे ॥
इनमें नहीं कोई सार ॥ मनवा...
४. हीरे जन्म दी कदर न पाई।
विषयां संग भारी प्रीत लगाई ॥
नैय्या पड़ी मंझधार ॥ मनवा...
५. बहुत गई अब थोड़ी रही है।
कर ले भक्ति रस्ता यही है ॥
ओ३म् से कर ले प्यार ॥ मनवा...

—०—

वरदान

मेरे दाता पूज्य महान। मुझ को दो भक्ति का दान।
१. तेरी भक्ति में है शक्ति।
मुझ में भर दो नाम की मस्ती ॥
हो जाऊं अंतर ध्यान। मुझ...
२. तेरे भक्त हैं न्यारे-न्यारे।
बन गये सब जग के प्यारे ॥
तन मन धन कर के कुरबान ॥ मुझ...

३. दुनियां के सब रंग हटा दो।

सच्चा भक्ति रंग चढ़ा दो ।।
झूम-झूम करूं गुण गान ।। मुझ···
४. अंदर बाहर नजर तूँ आवे।
वृथा स्वाँस न खाली जावे ।।
घट में बस जावो भगवान। मुझ···
मेरे··

—०

सुनो भगवन

सुनो भगवन ! शुद्ध और निर्मल करो मेरा मन।
1. मेरे मन का बर्तन भारी।
मैं मांज–मांज कर हारी ।।
अब तो आई तेरी शरण ।। सुनो···
२. यह मन मेरा है मैला।
विषयों का दाग कसैला ।।
किस विध करूं प्रभु तेरा सिमरन ।। सुनो···
३. मेरे मन को निर्मल कर दो।
हृदय में अमृत भर दो ।।
शान्त रहूं प्रभु तुझ में मगन ।। सुनो···

४. दुर्गुण कोई शेष रहे न।

इस मन में दोष रहे न॥

झुक जाऊँ करूँ प्रभु तेरा दर्शन॥

सुनो…

—०—

मेधा बुद्धि

अमृत वेले अमृत पीवां।

मेधा बुद्धि कर दो॥

१. प्रातः समय उठ तुझ को ध्याऊं।

दो कर जोड़ के सीस झुकाऊं॥

नित ही प्रेम सुधा रस पाऊं॥ मेधा…

२. अमृत वेला वह रस आवे।

विषय विकार न कोई सतावे॥

मोह ममता सारी हट जावे॥ मेधा…

३. तुझ को देखूँ मैं हर रंग में।

व्याप रहा है तूं हर अंग में।

जानूं प्रेम की उमंग में॥ मेधा…

४. जीवन उज्जवल हो निष्पाप।

मिट जाएँ सब तीनों ताप॥

रक्षा करो प्रभु जी आप॥ मेधा…

—०—

होली

आओ बहनों होली खेलें, प्रभु भक्ति रंग दी।
प्रभु भक्ति रंग दीं, महां पुरुषों के संग दी ॥
१. होवे ऐसा सुन्दर रंग। कर दे सब दुनियां को दंग ॥
मन में होवे प्रेम उमंग। प्रभु...
2. प्यारा होवे रंग गुलनार। बुद्धि में हों सत्य विचार ॥
कर दे जीवन का सुधार। प्रभु...
३. शील संकोच की हो पिचकारी। कर दे सारी दूर अंधियारी ॥
होवे प्रीत धर्म में भारी। प्रभु...
४. ऐसा रंग रंगाए आला। जिस में धुल जाए मन काला ॥
पीवें अमृत प्रेम प्याला। प्रभु...
आओ बहनों...

—०—

वन्दना

हे प्रेम स्वरूप अनूप प्रभु तेरा वंदन करते हैं।
वंदन करते हैं, प्रभु तेरा अभिनंदन करते हैं ॥

१. यह जगत महान बनाया ।
कण-कण में आप समाया ।।
कहीं नजर न आवे रूप ।। प्रभु···

२. नभ में दो भाई चलते ।
ज्योति शीतलता भरते ।।
कहीं छाया कहीं पर धूप ।। प्रभु···

३. तेरे देव उपकार कमावें ।
जल फल में रस बरसावें ।।
तू देखे बन कर मूक ।। प्रभु···

४. जिसने भी तुझको पाया ।
बन भक्त तुझे अपनाया ।।
तू अनुपम ज्योति स्वरूप ।। तुझे···

—०—

स्तुति

तेरा ब्रह्मांड है सारा, प्रभु प्यारा प्रभु प्यारा ।
तू सबका प्राण आधारा···

१. तेरी शक्ति बड़ी महान, जर्रे-जर्रे में तेरा ज्ञान ।
ऋषि मुनि लगाते ध्यान, भक्ति कर करते गुणगान ।।
यह सब तेरा है इशारा ।। प्रभु···

२. नभ में सूरज-चांद चलावे।

कहीं तारों का जाल बिछावे ॥

न्याय करे न गलती आवे।

तेरा पार न कोई पावे ॥

करे जग में तू उजियारा ॥ प्रभु...

३. सारे जग दा तू है वाली, करता सबकी तू रखवाली।
कोई जगह न तुझसे खाली, दाता तेरी शान निराली ॥

मिटा दें दूर अंधियारा ॥ प्रभु...

४. प्रभु जी करुणा हाथ पसार, होवे तुझसे सच्चा प्यार।
मुझमें रहे न कोई विकार, पाऊं मैं तेरा दीदार ॥

यह सब तेरा है विस्तारा ॥ प्रभु...

—०—

प्रभु महिमा

कैसा चक्र चलादां है तू काल दा।

दुनियां बनान वालिया ॥

१. सृष्टी अद्भुत अजब निराली।

कहीं ज्योति कहीं रात है काली ॥

तेरे नियमां तू कोई भी न टालदा ॥ दुनियां...

२. गगन मंडल और ऊंचे पर्वत।

गहरे सागर बरसे अमृत ॥

जल-थल दे जीवां नू है पालदा ॥ दुनियां...

३. दिव्य रतनां से भरी है [illegible] ।
हीरे नीलम देती है पृथ्वी ।।
प्रभु हर कम तेरा है कमाल दा ।। दुनियां···
४. नेति-नेति वेद पुकारे ।
योगी-ध्यानी-ज्ञानी हारे ।
कोई जोड़ वी न सके पत्ता डाल दा ।। दुनियां···
५. भागां वाला जीव तेरा दर्शन पावे ।
तप कर-कर के पाप जलावे ।।
ओहनूं दिसदा न कोई तेरे नाल दा ।। दुनियां···

—०—

पुकार

माँ बता दे मुझे कब मिलेगी ।
मेरे हृदय की ग्रंथी खुलेगी ।।
१. तुझको छोड़ा जगत में ही आई ।
मुख मोड़ा नहीं चैन पाई ।।
भारी संकट की घड़िया हैं आई ।
अज्ञान की रात्रि कब टलेगी ।। माँ···
२. प्यारे-प्यारे जिसे जाना अपना ।
हो गये न्यारे यह सब था ही सपना ।।
धन-जन पर चले कोई बस ना ।
पाश अहं की मेरी कब गलेगी ।। मां···

३. युग युगान्तर से विषयों ने घेरा।

अन्दर बाहर है काला अंधेरा॥
सच्चा साथी नहीं कोई मेरा।
मेहर की लहर मां कब चलेगी॥ मां···
४. माता इक बार करुणा दिखा दे।
गोद में ले के अमृत पिला दे॥
आने जाने का झगड़ा मिटा दे।
भाग्यशाली घड़ी तू मिलेगी॥ मां···

—०—

प्रार्थना

नाम धन का मैं भर लूं खजाना।
अन्त में न पड़े पछताना॥
१. नाम जप-जप मिला है यह नर तन।
ध्यान रख-रख किया था सिमरन॥
प्रातः सायं का मन को लगाना॥ अंत···
२. नाम धन की महिमा है भारी।
सारे सपने हैं धन जन व नारी॥
हीरे स्वांस न वृथा गंवाना॥ अंत···
३. पाप छल बल से जोड़ी है माया।
यौवन जन बल को पा इतराया॥
नश्वर सुख का नहीं है ठिकाना॥ अंत···

४. प्रेम भक्ति को हृदय में भर दो।
दिव्य ज्योति हो मेधा का वर दो ॥
छूट जाए मेरा आना जाना ॥ अंत···

—०—

विनय

मेरे मन का बर्तन है काला।
प्रभु किस विध इसको साफ करूं ॥

१. काल अनादि से साथी।
इक पल भी चैन नहीं लेता ॥
ममता माया का है जाला ॥ प्रभु···

२. निर्बल हूं युग-युग की मारी।
तप संयम साधन कर न सकूं ॥
अज्ञान का मुझ पर है ताला ॥ प्रभु···

३. योगी ध्यानी और ऋषियों ने।
तप कर-कर इसको मांजा है ॥
अहंकार बली का है भाला ॥ प्रभु···

४. प्रभु तेरी कृपा से यहां पापी।
पल भर में ही तर जाते हैं ॥
मेरे घट में करो प्रभु उजियाला।
तेरी कृपा से इसको साफ करूं ॥

—०—

सतसंग महिमा

सतसंग की पावन गंगा में। जिसने आकर स्नान किया।
दुई दुर्गुण सब दूर हुए। परमेश्वर को पहचान लिया ॥

१. सतसंग है सागर अमृत का।
तन मन बुद्धि को शुद्ध करे ॥
कोई विषय विकार न ठहर सके।
जीवन को उच्च महान किया ॥

२. सत्य ज्ञान का साबुन सतसंग है।
युग युग की मैल को धो देता ॥
मोह ममता का जाल भी टूट पड़े।
अन्तर मुख हो रस पान किया ॥

३. सतसंग सरोवर है मधु का।
अंग - अंग में भक्ति रस भर दे ॥
जब प्रेम का झरना उमड़ पड़े।
जन जन का ही कल्याण किया ॥

४. हर बार मिले लख बार मिले।
जो जन्म मिले रहुं सतसंग में ॥
झुक जाए सर तेरे चरनों में।
कर जोड़ प्रभु तेरा ध्यान किया ॥

—०—

प्रार्थना

दिव्य दर्शन हो तर जाऊं प्रभु ।
कोई चाह न मन में हो मेरी ।।
तेरे सिमरन से तर जाऊं प्रभु ।
कहीं जरा रहे न अंधेरी ।।

१. तेरे प्यार में सब कुछ खो जाऊं ।
युग युग की मैल को धो पाऊं ।।
जरा विषय विकार भी न लाऊं ।। कोई…

२. अन्तर मुख हो तेरा ध्यान रहे ।
सन्मुख तेरी ज्योति महान रहे ।।
आनन्द वीणा स्वर गान रहे ।। कोई…

३. सत्य ज्ञान प्रेम से हो भक्ति ।
तेरे दृढ़ विश्वास की हो शक्ति ।।
प्रभु नाम रतन की हो मस्ती ।। कोई…

४. अमृत पीकर हो जाऊं अमर ।
तेरे चरनों में झुक जाए सर ।।
ब्रह्म धाम हो केवल मेरा घर ।। कोई…

—०—

पुकार

जीवन अद्भुत गीत। जग में जीवन है इक गीत॥
कैसे करूं प्रभु प्रीत जग में। जीवन है इक गीत॥

१. सूर्य चढ़े अन्धेरा छाए।
देख देख समझ न आए॥
प्रभु जानी न तेरी रीत॥ जग...

२. युग युग से जीना न आया।
मर मर जीकर नर तन पाया॥
कभी हुई न मेरी जीत जग में॥ जी...

३. बंधु बांधन सम्पन्न पाकर।
विषयों में सब समय गंवा कर॥
कोई बना न मेरा मीत॥ जग...

४. चैन नहीं है भटक रही हूं।
करुणा कर प्रभु लटक रही हूं॥
कहीं समय न जाए बीत॥ जग...

—०—

पश्चाताप

दुनियां में सबसे प्यार किया।
प्रभु प्यार का अमृत पी न सकी॥

न याद रहा इकरार किया ।
तेरा नाम सिमर कर जी न सकी ॥
१. सब मात पिता बंधु भाई ।
जो नाती साथी थे मेरे ॥
सब स्वार्थ था न सार लिया ॥ प्रभु...
२. रिश्ते नाते कई छूट गये ।
कई टूट गये कई रूठ गये ॥
अपना समझा इतबार किया ॥ प्रभु...
३. धन जन पाकर अहंकार बढ़ा ।
भूलें पर भूलें करती रही ॥
अन्तर मुख हो न विचार किया ॥ प्रभु...
४. कहां जाऊं कैसे पाऊं तुझे ।
दिन रात नहीं है चैन मुझे ॥
चिन्तन करके न सुधार किया ॥ प्रभु...

—०—

प्रार्थना

नैय्या पार करो। परम पूज्य परमेश्वर ।
सभी अन्धकार हरो...
१. चलती फिरती थकती आई ।
मिला न कोई ठिकाना ।

दुख संकट सब सहती आई।
अन्न खाया कहीं दाना।
अभी सुधार करो। परम...
२. दीन दु:खी और निर्धन सारे।
दर तेरे पर आते।
ध्यानी ज्ञानी भक्त प्यारे।
झोली भर-भर जाते।
सत्य विचार भरो। परम...
३. नैय्या मेरी भव सागर में।
डगमग-डगमग डोले।
चारों ओर है घुमर घेरी।
खाती है हिचकोले।
प्रभु बिकार हरो। परम...
४. शुद्ध हृदय प्रभु कर दो मेरा। होवे न मैं मेरी।
दिव्य नैन हो दर्शन तेरा। बन जाऊं मैं तेरी।
अपना आधार करो। परम...

—•—

प्रार्थना

दीनां बंधु दीना नाथ। मेरी डोरी तेरे हाथ।
डोरी ले लो अपने हाथ। बैठूँ तब चरनन के पास।

१. डोरी कर दूं तेरे हवाले।

लहर-लहर प्रभु आप संभालो।

दो कर जोड़ है बिनती खास। मेरी...

२. जैसी तैसी हूं प्रभु तेरी।

डोरी पकड़ो करो न देरी।

कई जन्मों की यही है आस। मेरी..

३. खोलो प्रभु जी ब्रह्म द्वार।

अमृत रस का हो संचार।

तुझ पर हो सच्चा विश्वास। मेरी...

४. दुर्गुण अवगुण द्वेश रहे न।

इच्छा कोई शेष रहे न।

कट जाए मृत्यु का पाश। मेरी...

—०—

स्तुति

रचने हारा तू है। फिर भी प्यारा तू है।

ओ३म् प्यारा। प्राणी मात्र को तेरा सहारा।

१. तेरी शक्ति का अंत न पाया।

देख हस्ती को सर है झुकाया।

ऋषि गा - गा हारे। योगी सर को वारे॥ ओ०...

२. ऊंचे पर्वत हैं झरने निराले।

मीठे चश्मे हैं अमृत के प्याले।
घास प्यारी लगे। फूल क्यारी सजे॥ ओ०...
३. कर्मों का चक्र ऐसा चलावे।
बिन यंत्रों के न्याय दिखावे।
जो करे सो भरे। न इन्कार करे॥ ओ०...
४. करूणा हो तेरी तुझ को निहारूं।
तेरे चरनों में सब कुछ ही वारूं।
होवे सच्ची लगन। रहुं तुझ में मगन॥ ओ०...

—०—

सच्चा रंग

रंग - रंग - रंग मेरा चोला रँग दो।
कई जन्मों से मैं न रंगियां। भक्ति वाला रंग दो।
१. पिछड़ गई मैं ममता की मारी।
युग - युग बीते आई न वारी।
संग - संग - संग महां पुरुषों का संग दो॥ कई...
२. ऋषि मुनियों ने है रंग रंगिया।
दर तेरे वर मेधा दा मंगिया।
भंग - भंग - भंग पाप कर भंग दो॥ कई...

३. प्रभु जी ऐसा रंग रंगा दो।
दिव्य अमृत का पान करा दो।
दंग - दंग - दंग दुनियाँ का दंग दो।। कई...

—०—

अर्चना

युग-युग बीते हैं मन में अंधेरा।
करुणा कर दो प्रभु हो सवेरा।।

१. कोटि जन्मों की काली घटाएं।
आगे पीछे व हैं दाएं बाएं।।
मार्ग पा न सकूं मैं तो तेरा।। करुणा...

२. पांच शत्रु बड़े भारी भारी।
मैं तो निर्बल हूं ममता की मारी।।
चहूं ओर सभी ने है घेरा।। करुणा...

३. सबकी सुनता तू है नाथ दाता।
खाली दर से न कोई है जाता।।
आने जाने का कष्ट घनेरा।। करुणा...

४. दिव्य ज्योति से उज्ज्वल बना दो।
शुद्ध प्रेम का झरना बहा दो।।
मेरे घट में हो तेरा बसेरा।। करुणा...

—०—

प्रभु खोज

१. मैं ढूंढ-ढूंढ कर हारी।
प्रभु जी तुम मिले नहीं ॥
वन ढूंढा क्यारी-क्यारी ॥ प्रभु···
२. छोड़ अमृत मृत लोक में आई।
चकाचौंध देखी भरमाई ॥
फिरती मारी-मारी प्रभु जी···
३. दुनियां में अजब नजारे देखें।
सुन्दर साथी प्यारे देखे ॥
देखी संपत्त सारी ॥ प्रभु···
३. इस जग में कहीं चैन न पाया।
सब कुछ पाकर धोखा खाया ॥
चहूं ओर मेरे अंधियारी ॥ प्रभु···
४. मेरी आत्मा तुझे पुकारे।
दे दर्शन मैं जाऊं वारे ॥
कर जोड़ है आगे जारी ॥ प्रभु···

—०—

नाम धन

नाम धन को सदा मैं बढ़ाती रहूं।
ओ३म् का गीत पल-पल ही गाती रहूं ॥

१. स्त्रष्टि कर्त्ता व धर्ता वही ओ३म् है।

पालन कर्त्ता व हरता वोही ओ३म् है ।।

अंतर मुख होके दिव्य रस ही पाती रहूं ।। नाम…

२. माल धन धाम सुन्दर खजाना जो है।

तन का आराम वैभव का आना जो है ।।

सारे नश्वर हैं ममता हटाती रहूं ।। नाम…

३. मेरे प्यारे व परिवार सारा जो है।

है दुलारे जो फैला पसारा जो है ।।

न्यारी रहकर आसक्ति मिटाती रहूं ।। नाम…

४. दिव्य ज्योति दो मस्ती रहे नाम की।

मन की शुद्धि हो, शक्ति रहे ध्यान की ।।

घट के अन्दर तेरा दर्श पाती रहूं ।। नाम…

—०—

मुसाफिर खाना

मन मेरे क्यों लाए डेरे, जगत मुसाफिर खाना है।
जगत मुसाफिर खाना है, इक दिन यहां से जाना है ।।

१. आया था विहार करने।

सब जग से प्यार करने ।।

मार के बैठा क्यों धरने ।। जगत…

२. सुन्दर मकान घेरा।

इसमें कहीं नाम न तेरा॥
फिर क्यों कहता मेरा-मेरा॥ जगत...

३. जिसको तू कहता अपना।
है सब दिन रात का सपना॥
इनमें आस किसे की रख न॥ जगत...

४. जोड़ी है माया नश्वर।
साथ न जाए तिल भर॥
फंसा रहता है तू दिन भर॥ जगत...

५. साजो समान लाए।
बंगले हैं खूब सजाए॥
कोई न तेरा साथ निभाए॥ जगत...

६. मान ले मन मेरा कहना।
प्रभु भक्ति सुन्दर गहना॥
सिमरन में दिन रात ही रहना॥ जगत...

—०—

तृष्णा

मेहनत कर कर धन कमाया। तृष्णा फिर भी मोई न।
कीता वैदा याद न आया। मन दी मैल वी धोई न॥

१. सौ से बन गया लख करोड़ी।

जमा कराये भरी तेजोरी ।।
पाप करन विच कसर न छोड़ी ।। तृष्णा…
२. बन गये दस व बीस मकान।
फर्श ग़लीचे आलीशान ।।
बढ़िया बढ़िया लाए सामान ।। तृष्णा…
३. नश्वर धन से बढ़ता जाए।
अन्दर अन्दर हर्ष मनाए ।।
ईश्वर दे गुण कभी न गाए ।। तृष्णा…
४. दान धर्म से ही मुख मोड़ा।
परम पिता से नाता तोड़ा ।।
माया ने फिर साथ ही छोड़ा ।। तृष्णा…
५. भक्ति करके प्रभु गुण गाकर।
भर ले नाम रतन सागर ।।
सच्चे दिल से ओ३म् सिमर कर।
तृष्णा पास खलोई ना ।।

—०—

महा पुरुषों की याद

भारत की ही दिव्य धरती है।
महा पुरुष ही आया करते हैं ।।
यह रचना सुन्दर लगती है ।। महा…

१. योगी यति ऋषि वर सारे।
इस धरती पर ही आए हैं।
जपी तपी और भक्त प्यारे।
सत्य उपदेश सुनाए हैं।
यह सब ईश्वर की शक्ति है।। महा...

२. श्री रामचन्द्र मर्यादा लेकर।
योगी कृष्ण महान हुए।
गुरु नानक देव जी नाम सिमर।
गांधी पूज्य महान हुए।
इनमें दिव्य ज्योति जगती है।। महा...

३. श्री विरजानन्द जी तपस्वी।
अन्तर मुख होकर ध्यान किया।
ऋषि दयानन्द तेजस्वी।
वेदों का अमृत पान किया।
सत्य वाणी मुख से सजती है।। महा...

४. प्रभु आश्रित जी भक्ति में रंग कर।
वेदों का ही प्रचार किया।
अन्तर मुख हो ध्यान लगा कर।
गायत्री यज्ञ का विस्तार किया।
प्रभु देव की अनुपम शक्ति है।। महा...

५. पू० आनन्द स्वामी जी जीवन भर।
मां गायत्री के गुण गाते रहे।

वेद अमृत का झंडा लेकर।
हंसते और हंसाते रहे।
सुन्दर आकृति जंचती है॥ महा...

६. महापुरुषों की याद मनाएं।
हम जीवन का सुधार करें।
गुण सबके अपने में लाएं।
बुद्धि का विस्तार करें।
अंग अंग में प्रभु की शक्ति है।
महापुरुष ही आया करते हैं।
भारत की दिव्य धरती है॥ महा...

—०—

पुकार

मैं पुकारूं पुकारूं पुकारूं।
मेरी सुन लो प्रभु जी पुकारूं॥
तेरे चरनों में सब कुछ मैं वारूं॥ मेरी...

१. सबका स्वामी तू है वेद गाते।
अन्तरयामी तू है। योगी ध्याते।
तुच्छ बुद्धि है कैसे निहारूं॥ मेरी...

२. विनती कर २ के युग २ ही बीते।
तुझको पाने के साधन न कीते।
अन्तर मुख हो जरा न विचारूं॥ मेरी...

३. अशक्त हूं मुझमें ऐसी न शक्ति।

मस्त हूं माया में न है भक्ति।
पल २ विषयों की मार से हारूं।। मेरी...

४. आनन्द सागर से अमृत पिला दो।
रोम रोम में झरना बहा दो।
शुद्ध हृदय हो तुझको निहारूं।। मेरी...

—०—

पांच शत्रु

शत्रु पाँच बड़े बलवान,
कैसे बच पाऊं भगवान।

१. काल अनादि से हैं साथ।
आगे पीछे रहते पास।
धारण करते नहीं सत्य ज्ञान।। कैसे...

२. मोह तो कई-कई रूप दिखावे।
अंतर वृति टिक न पावे।
विचलित कर देता है ध्यान।। कैसे...

३. अहं की शक्ति है बड़ी भारी।
क्रोध की मस्ती है महा भारी।
काम भयंकर लाए तूफान।। कैसे...

४. लोभ से कई-कई चालें चलता ।
छल फरेब कपट है भरता ।
कर न पाऊं दूर अज्ञान ।। कैसे…

—०—

शुभ कामना

यह कैसा शुभ दिन आया ।
सब को बहुत बधाई हो ।

१. वेदों के यज्ञ रचावें ।
भगवान देखने आवें ।
आशीर्वाद दे जावें । सब…

२. प्रभु ने शुभ घड़ी दिखाई ।
मन इच्छा पूरी कराई ।
कीती है सफल कमाई । सब…

३. धन संपत कितनी पावें ।
कर जोड़ के सीस झुकावें ।
दुखियों के दर्द मिटावें । सब…

४। सुख शान्ति आनंद पावें ।
जीवन को सफल बनावें ।
भक्ति का रंग चढ़ावें । सब…

—०—

मेधा वर दे अमृत भर दे।
तेरे द्वारे आई माँ॥ तेरे…

१. तू ही है सच्ची महतारी।
मैं हूं जन्म-जन्म की मारी।
देर करो न मेरी वारी॥ तेरे…

२. तुझ को वर ले मेरी बुद्धि।
होवे अंत:करण की शुद्धि।
मन में रहे जरा न खुदी॥ तेरे…

३. पाकर तुझ से भर्गः शक्ति।
कर लूं परम पवित्र भक्ति।
ममता की न रहे आसक्ति॥ तेरे…

४. तुम पर हो सच्चा विश्वास।
जानूं मानूं अपने पास।
पूरण कर दो मेरी आस। तेरे…

—०—

पूज्य प्रभु आश्रित जी को श्रद्धान्जलि

हो मेरा प्रणाम। गुरुवर हो मेरा प्रणाम।

१. संपन्न घर में जन्म लिया था।
बचपन पूरा नहीं खिला था।
चले गये पिता महान॥ गुरु…

२. बड़े कष्टों से माँ ने पाला।

हृदय में भर प्रेम प्याला।

धर धीरज किया गुणगान। गुरु...

३. गायत्री महामंत्र को अपनाया।

देव यज्ञ को पिता बताया।

श्रद्धा भक्ति कर ध्यान।। गुरु...

४. ब्रत किए फिर भारे-भारे।

दिव्य दर्शन पाए न्यारे-न्यारे।।

कर प्रभु का अमृत पान।। गुरु...

५. सुखी दुःखी के बन गयें सहारे।

सब कहते महराज हमारे।।

बन गये पू० महान।। गुरु...

६. सब को सत्य उपदेश सुना कर।

दुर्गुण अवगुण दूर हटा कर।।

हुआ सब का कल्यान।। गुरु...

७. ऋणि रहें हम सदा तुम्हारे।

जब तक सूर्य चाँद सितारे।

पहुंच गये ब्रह्म धाम। गुरु...

—o—

प्रभु रचना

तू धन्य मेरे दाता, कैसा रचाया है संसार।

१. निराकार तू आप कहावे, रचना न्यारी-न्यारी।
बिन हाथों सब जगत बनावे, महिमा भारी-भारी ।।
तू सकल विधाता ।। कैसा...

२. बिन खम्बे आकाश बनाया, जल पे ठहरी पृथ्वी।
बिन तारे सूरज चांद बनाया, देख सके न दृष्टि ।।
कोई अंत न पाता ।। कैसा...

३. लंबे-लंबे पेड़ खड़े हैं, कोमल घास निराली।
आगे पीछे दाएं बाएं, हर्ष देवे हरियाली ।।
तू नज़र न आता ।। कैसा...

४. देख-देख प्रभु रचना तेरी, क्या-क्या गुण मैं गावां।
ज्योति जगा प्रभु करो न देरी, चरनी सीस झुकावां ।।
तू सच्ची माता ।। कैसा...

—०—

भरा मेला

असी भरिया मेला छड जाणां।
ऐह बेला फिर-फिर नहीं आणां ।।

१. किस्मत से हम मिले हैं सारे ।

बहन भाई हैं न्यारे-न्यारे ।।

यज्ञ करना प्रभु गुण गाणां ।। असी···

२. पर्वत देखे भारी-भारी ।

प्रभु की रचना न्यारी-न्यारी ।।

प्रेम से है पीड़ा खाणां ।। असी···

३. कोड़ी-कोड़ी माया जोड़ी ।

बने व्यापारी लखी करोड़ी ।।

साथ नहीं कुछ ले जाणां ।। असी···

४. इक दिन सबको जाना होगा ।

कर्मों का फल पाना होगा ।।

सब कुछ ऐथे रह जाणां ।। असी···

५. दुर्लभ है मानव का जीवन ।

शुद्ध हृदय से कर ले सिमरन ।।

नहीं होगा फिर पछताणां ।। असी···

६. भूल चूक मेरी माफ ही करना ।

ईश्वर पर विश्वास ही करना ।।

मीठा हो प्रभु का भाणां ।। असी···

—०—

पुकार

विकल जिया तरस रहा ।

कोई प्रभु से मिला दो री ।।

१. निर्बल हूं मैं दूर किनारा ।
काली घटाएं आर न पारा ॥
कोई आकर राह दिखा दो री ॥ विकल…
नैनों से पानी बरस रहा…

२. कभी तो थी सचखंड की वासी ।
आनन्द में नहीं फूली समाती ॥
कोई ममता का जाल हटा दो री ॥ विकल…
भूली मैं जाता हर्ष रहा…

३. प्रभु जी तुझसे मुख को मोड़ा ।
कोटि जन्म से पड़ा बिछोड़ा ॥
सत्य ज्ञान की ज्योति जगा दो री ॥ विकल…
पापों का बादल बरस रहा…

४. दया का सागर नाम है तेरा ।
भर मेरी गागर काम है तेरा ॥
प्रभु भक्ति का रंग चढ़ा दो री ॥ विकल…
परम आनन्द बरस रहा…

—०—

सच्चा प्यार

जब प्यार हुआ परमेश्वर से ।
धन धाम खजाना भूल गया ॥

जब प्यास लगी प्रभु दर्शन की।
अपना व बिगाना भूल गया ॥
१. हृदय में तरंगें उठने लगीं।
प्रभु के शरणागत होने की ॥
जब मस्त हुआ पी प्रेम सुधा।
दुःख दर्द भी भूल गया अपना ॥
२. ईश्वर की जब दृष्टि पड़ी।
सच्चे भक्त की हालत पर ॥
जिस दिल में छुपाया प्रीतम को।
वह दिल भी छुपाना भूल गया ॥
३. परमेश्वर का जो दीदार हुआ।
कुछ होश न अपनी बाकी रही ॥
एक बार झुका जो चरनों में।
फिर सर को उठाना भूल गया ॥
४. आनन्द का सागर उमड़ पड़ा।
जब भक्त के हृदय मंदिर में ॥
मैं नर हूं तुम नारायण हो।
यह भेद बताना भूल गया ॥
जब······

—०—

बधाई

मिल कर सारे देओ बधाई। जो आए मेहमान ।।
बालक पूज्य बने गुणवान।

१. दयानन्द सा हो उपकारी।
श्रद्धानन्द सा हो हितकारी।
रामचन्द्र सा आज्ञाकारी।
ओ३म जैसा हो बलकारी।
सब जग इस की याद मनावे।
चमके सूर्य समान ।। बालक...

२. पी अमृत का प्रेम प्याला।
हो भक्ति का रंग निराला।
अज्ञान हटा सब करे उजाला।
नाम रटन से हो मतवाला।
सत्य धर्म का पालन करके।
योगी बने महान ।। बालक....

३. शुद्ध हृदय से कर के चिन्तन।
दाता बन कर पाले निर्धन।
स्वांस-२ हो ओ३म का सिमरन।
तन मन धन हो प्रभु के अर्पन ।।

सब के दिल पर राज्य करे यह।
पहुंचे ब्रह्म के धाम ॥ बालक…

—०—

गमन

इक दिन तेरा यहां से गमन होगा।
मन क्यों पाप करे।
फिर अंत समय न भजन होगा…

१. कर इकरार तू जग में आया। भूला है भगवान।
खा सो कर के वकत गंवाया। बनिया है नादान।
किस विध फिर प्रभु का भजन होगा। मन…

२. मात पिता भाई बहन और नारी।
किसे न साथ निभाया।
बेटे पोते सब संसारी। सपने की है छाया।
तेरे संग किसी का चलन न होगा। मन…

३. पाप कमा कर माया जोड़ी। सुन्दर महल बनाए।
फिर भी लगदी थोड़ी-थोड़ी। फर्श हैं खूब सजाए।
जाएं साथ न कोई तेरे धन होगा। मन…
प्रभु से सच्ची प्रीत लगा कर जीवन सफल बना लें।
दुविधा दुई सभी हटा कर। भक्ति रंग चढ़ा लैं।
पावें मुक्ति न जन्म मरन होगा। मन…

—०—

जग के नजारे

देख दुनियां के झूठे झमेले । तो मन को हटना पड़ा ।
सारी आयु यूं ही खेल खेले । प्रभु गीत गाना पड़ा ।

१. गर्भ का दुःख भयंकर लटक कर सहा ।
मौज बचपन बहार भटक कर रहा ।
मां का ही प्यार था सब ही गुलजार था ।
खेल कूद में बकल बिताना पड़ा ।

२. यौवन में धन को पा सत्य न धारण किया ।
विषयों में मन लगा न ही सिमरन किया ।
तन के सुख मन के दुःख जन के रूख में
समय को गंवाना पड़ा ।

३. इस तरह हर्ष संकट ही आते रहे ।
कई रुलाते रहे कोई हंसाते रहे ।
जिस को अपना किया उस ने धोखा दिया ।
फिर तो अपने कदम को बढ़ाना पड़ा ।

४. प्रभु जी कृपा करो आई तेरी शरन ।
तीनों ताप हरो रहूं तुम में मगन ।
विनती स्वीकार हो तेरा दिदार हो ।
तेरे चरनों में सर को झुकाना पड़ा ।

—•—

प्रभु शरण

तुम्ही जो अपनी शरण में लेते।
हे नाथ फिरती मैं क्यों द्वारे-द्वारे।
अपना सहारा मुझ को देते।
क्यों मैं लेती कई-कई सहारे।

१. धाम न जानूं ध्यान न जानूं।
महिमा तेरी महान न जानूं।
करुणा से मेरी झोली जो भरते।
काहे को फिरती मैं हाथ पसारे।

२. तुम्ही से मैंनें लगन लगाई।
तुम्ही को पाने तेरे दर आई।
अपने बनाती मैं क्यों बिगाने।
हे नाथ रहते सदा तुम हमारे।

३. करुणा दिखावो देर न लावो।
युग-२ की बिछड़ी गोद बिठाओ।
दुई व ममता सभी दूर करते।
आनंद के लेती प्रेम हुलारे। तुम्ही···

—०—

सतसंग

सोहड़े लगदे महल चौबारे। जिथे सतसंग लगता।
ओथे आंवदे भक्त प्यारे॥ जिथे...

१. जिस घर दे विच सतसंग लगदा।
पाप दरिद्र उथो भजदा।
विषय वी करन किनारे॥ जिथे...

२. कन कन उस दा होवे पवितर।
जो आवे बन जावे मित्र।
सब लैंदे प्रेम हुलारे॥ जिथे...

३. सतसंग दे विच अमृत बरसे।
प्रभु मिलन नूं आत्मा तरसे।
शुद्ध मन से ओ३म् उच्चारे॥ जिथे...

४. जीवन का आधार है सतसंग।
मानवता का सार है सतसंग।
बुद्धि से सत्य विचारे॥ जिथे...

५. तू भी बने सतसंग का प्यारा।
जग में बने वह सबका प्यारा।
तप कर पहुंचे ब्रह्म द्वारे॥ जिथे...

—०—

भरोसा क्या

सहारे छूट जाते हैं। सहारों का भरोसा क्या।
प्यारे रूठ जाते हैं। प्यारों का...

१. दिलासे जो जहां के हैं। सभी रंगीन नजारे हैं।
नजारे छूट जाते हैं।। नजारों...

२. तमन्नाएं जो तेरी हैं। फुव्वारे हैं यह सावन के।
फुव्वारे सूख जाते हैं।। फुव्वारे...

३. यह खूबसूरत गुब्बारे हैं।
तू इन पर मत फिदा हो मन।
गुब्बारे फूट जाते हैं।। गुब्बारे...

४. ओ३म् का नाम लेकर के।
तू दुनियां से किनारा कर।
किनारे टूट जाते हैं।। किनारों...
झुलस मन मत बहारों में।
बहारों का भरोसा क्या...

—०—

मतलब का संसार

मतलब का संसार है सब मतलब का।

१. मतलब की है दुनियां दारी।
मतलब के हैं सब संसारी।
मतलब का व्यवहार।। है...

२. मतलब का है कुटुंब कबीला।
मतलब से सब बना वसीला।
मतलब का परिवार॥ है…

३. मात पिता भाई बन्धु प्यारे।
बेटे पोते नाते सारे।
मतलब की है नार॥ है…

४. चार दिनों का है यह मेला।
करना है फिर सफर अकेला।
ओ३म् से कर ले प्यार॥ है…

—०—

मन की शुद्धि

रहूं तुझमें मगन। शुद्ध करो मेरा मन।
करुणा कर दो। मेरे हृदय में दिव्य गुण भर दो।

१. दिव्य धरती पर जन्म है पाया।
दिव्य देवों ने जीवन बढ़ाया।
जानूं इसका मर्म॥ शुद्ध…

२. दिव्य रचना है शिक्षा दिलाती।
दिव्य संदेशों को है सिखाती।
करूं इसका मनन॥ शुद्ध…

३. शुद्ध हृदय हो तुझको बसाऊं ।
दिव्य अमृत का आनन्द पाऊं ।
न हो आवा गमन ।। शुद्ध...

—०—

हार गए

बड़े-बड़े हार के चले ।
पता नहीं तेरी खेल निराली दा ।।

१. रावण जैसे प्रतापी राजे ।
जिनके बाजन दर पर बाजे ।।
आ गये वह काल दे तले ।। पता...

२. कर-कर कमाई माया जोड़ी ।
सेठ व्यापारी बने करोड़ी ।।
खाली हथी चले ।। पता...

३. धन दौलत सब महल अटारी ।
संगी साथी रिश्तेदारी ।।
छोड़ मुसाफिर चले ।। पता...

४. प्यारे-प्यारे मित्र नारी ।
बेटे पोते सब संसारी ।।
लालये ने छाया छले ।। पता...

५. हीरा जन्म इसको चमका ले।

भक्ति करके प्रभु को रिझा ले ॥
अंत को तलियां न मले ॥ पता···

—०—

ऋषियाँ मुनियाँ का जमाना आया।
आओ दर्शन कर लो ॥

१. प्रभु कृपा से शुभ दिन आया।
कैसा सुन्दर यज्ञ रचाया ॥
देखा सबका मन हरषाया ॥ ऋषियाँ···

२. प्रभु आक्षित जी की फुलवारी।
दूर से आए हैं नर नारी ॥
यज्ञ की शोभा होगी न्यारी ॥ ऋषियाँ···

३. स्वामी जी का है प्रबन्ध।
गगन में छाई है सुगन्ध ॥
चढ़ जाए भक्ति वाला रंग ॥ ऋषियाँ···

४. यज्ञ गायत्री का विस्तार।
किया वेदों का प्रचार ॥
है प्रभु आक्षित का विस्तार ॥ ऋषियाँ···

५. दुर्गुण अवगुण दूर हटाएं।
अपना जीवन सफल बनाएं ॥
बुद्धि को ही शुद्ध बनाएं।

—०—

ओ३म् योग निकेतन

रचने हारा सबसे न्यारा।
तुझको लाखों प्रणाम ॥

१. इस रचना की अजब बनावट।
अन्दर बाहर करी सजावट ॥
पर्वत यारा चश्मा प्यारा ॥ तुझको···

२. तिनके से ले करके सबको हिलाता।
किए कर्म अपने का सब कोई पाता ॥
है सहारा सबसे न्यारा ॥ तुझको···

३. कल-कल करें नदियां हैं महिमा गाती।
फल पेड़ पत्ता डाली सबको है भाती ॥
प्राण आधारा सबसे न्यारा ॥ तुझको···

४. सब में बसा तूने सब को बसाया।
भक्तों ने तुझे तप करके रिझाया ॥
तेरा उजियारा सबसे न्यारा ॥ तुझको···

—०—

यदिपुर

सच्चा देश हितकारी ऋषि दयानंद सी।
सच्चे शिव दा पुजारी ॥ दया...

१. सच्चे शिव सच्चे धन दा, संचार कर गया।
२. सुते देश नूं जगाया, ते सुधार कर गया।
३. आया बन के खवैया, नैय्या पार कर गया।
कैसा था वह उपकारी ॥ योगी...

१. भारत माता दी ऊमीदां दा सहारा बन के।
२. देश वासियां दी अखां का तारा बनके।
३. नैय्या डोलदी दे वासते, किनारा बनके।
आया सच्चा ब्रह्मचारी ॥ योगी...

१. कष्ट देख के वी दयानंद हँसता रहा।
२. देश वासियां दी अखियां विच वसदा रहा।
३. अपनी शक्ति दा प्रकाश करके दसदा रहा।
कैसा घोर व्रतधारी ॥ योगी...

१. सच्चे शिव लई सारा कर बाहर छोड़िया।
२. माता पिता महल माड़ी, धन माल छोड़िया।
३. तप संयम साधन कर, प्रभु से नाता जोड़िया।
है त्याग बड़ा भारी ॥ योगी...

—o—

मेरे अन्दर बसे ललारी। चोला रंगियां न।
फिर दी मारी मारी चोला...

१. अन्दर बैठा कई रंग रंगदा।
इक तो इक रंग वध के सजदा।
हर रंग दी शोभा न्यारी।। चोला...

२. बैठा अन्दर सब कुछ देखे।
पुण्य पाप दे करदा लेखे।
सच्चा न्याय कारी।। चोला...

३. नस नाड़ी नूं वही चलावे।
सब कुछ करदा नजर न आवे।
सबदा है हितकारी।। चोला...

४. महा दानी है पर उपकारी।
सुन्दर रचना महिमा भारी।
देखां छवि न्यारी।। चोला...

५. रंग दो ऐसा कभी न उतरे।
ज्यों ज्यों धोवां त्यों त्यों निखरे।
दे दर्शन करुणा कारी।। चोला...

६. ऐसी लगन लगा दो भगवन।
अन्तर मुख हो तेरा चिन्तन।
जावां मै बलिहारी।। चोला...

—०—

कैसे करता मनवा प्यार प्यार २ प्यार। तेरा कौन है।
तेरा कौन है तेरा कौन है जी तेरा कौन है।

१. प्यारे देखे सारे देखे। ऊंचे महल चौबारे देखे।
इन सबमें नहीं कुछ सार २ सार॥ तेरा...

२. चार दिनों की भरी जवानी।
माया है सब आनी जानी।
नेकी कर उपकार कार कार॥ तेरा...

३. मेहनत कर कर धन कमाया।
बिन भक्ति दे समय गंवाया।
मिले जन्म न बार बार बार॥ तेरा...

४. अन्तर मुख हो चिन्तन कर ले।
रग रग में दिव्य ज्योति भर ले।
हो जाएं भव से पार पार पार॥ तेरा...
तेरा कौन है। तेरा कौन है।
जी तेरा कौन है।

—०—

जन्म दिन

दर्शन प्यारे आंखों के तारे।
वर्ष गांठ आज तेरी मनाएं।

१. बीत चुका तेरा सारा ही बचपन।

नई नई शक्ति हो रही उत्पन्न।
सुन्दर सत्य भावों का आगमन ॥ वर्ष...

२. प्रभु की कृपा से मिली है यह काया।
माता पिता पूर्ण योगी की साया।
धन माल सम्पन्न सब सुख पाया ॥ वर्ष...

३. हमारे ही हृदय की आशाएं सारी।
तुझ पर ही निर्भर हैं दर्शन हमारी।
करो प्रेम भक्ति होवे प्रेम भारी ॥ वर्ष...

४. प्रभु की दया को दिल में धारो।
गायत्री की शक्ति से जीवन सुधारो।
करो दीन सेवा सभी दुःख टारो ॥ वर्ष...

५. तेरा नाम रखने का आदेश यही था।
जीवन बनाने का संदेश यही था।
करो आत्म दर्शन उद्देश्य यही था ॥ वर्ष...

६. दुनियां में कितनी ही सम्पत्ति पाओ।
समझो प्रभु की सर को झुकाओ।
नम्र हो दया कार प्रभु गीत गाओ ॥ वर्ष...

७. युग युग जीवो अमर होना जग में।
नाम धन का बीज बोना नभ में।
अश्वमेध यज्ञों को करना ही जग में ॥ वर्ष...
दर्शन प्यारे............

—०—

स्वागत

१. स्वागत हो आने वाले।
आकर दिल पे छाने वाले।
नयनों में समाने वाले। तुम्हारा स्वा....

२. कैसे स्वागत करें अनजान।
जानते नहीं कुछ विधि विधान।
न देना त्रुटियों पर कुछ ध्यान।
कांटों को फूल बनाने वाले। स्वा....

३. न जाने स्वागत की कुछ रीत।
रीत में हो न जाए अवरीत।
रीत गाती है प्रीत की गीत।
प्रीत की रीत निभाने वाले। स्वा....

—०—

भर दे अन्दर मोती।
अ मैं ताँ कुंज वी न खोजिया।

१. बाहर गुवायाँ हीरा, न पाए हीरे मोती।
सारी आयु रही कंगाली।
चेत तू मनुवा भोलिया।

२. जिस मिट्टी तू नित चमकावे।

बने खाक दी ढेरी। बने···
इस मिट्टी विच सोना वी सी।
तू न कदे टटोलिया।

३. मालिक तेरा आसेद सागर।
दया करेगा तूझ पर।
चुन-चुन परमारथ मो मोती
जे तू हार पिरो लिया।

४. नश्वर माया कठी कीती।
सुन्दर महल बनाए।
कदे न प्रेम प्याली पीती।
जन्म अमौलक रौलिया।

—०—

तपोवन

जग में देखी बड़ी बेवफाई।
प्रभु हो कैसे तुम से रसाई।
धन जन भी बेन न सहाई।

१. माया का पका लंबा है जाला।
भारी पापों से मन मेरा काला।
दूर कर सकूं मैं बुराई। हो···

२. कुटुंब सारे में हैं सब से प्यारे।

जिन की खातिर हैं तन मन वारे।

पल में हो जाएगी सब जुदाई। प्रभु...

३. हर्ष संकट भी कई बार आते।

कोई हंसाते हैं कोई रुलाते।

रात दिन भी नहीं चैन पाई। प्रभु...

४. अन्तर मुख हो न सोचा विचारा।

एक ओ३म है जीवन अधारा।

सच्चे दिल से न प्रीती लगाई। प्रभु...

५. अज्ञान के परदे सारे हटा दो।

रोम - रोम में ज्योति जगा दो।

करुणा कर दो हो मेरी सुनाई।

अब तो हो जाए प्रभु से रसाई। प्रभु...

—०—

तू है

मेरा नाथ तू है मेरा नाथ तू है।

अकेली नहीं मैं मेरे साथ तू है।

१. पावन पवित्र हो कर जग में आई।

तेरी ही दया करुणा का हाथ तू है।

२. दुःखों में रुलाया। सुखों में हंसाया।

हर पल में ही रहता मेरे पास तू है।

३. न जाने चली कब से नहीं ठौर पाया।

प्रभु मेरे जीवन का प्रकाश तू है।
४. परदा हटा दो निहारुं मैं तुझ को।
खो जाऊं तुझ में, साक्षात तू है।

मेरा…

—०—

ऊँचा द्वारा

मनवा देख जरा। ऊंचा प्रभु का द्वारा।
आगे कदम बढ़ा। मिल जाए ईश्वर प्यारा।
१. घर-घर दुनियां कई दर देखे। किसी न तुझे बिठाया।
ऊंचे महल चौबारे देखे। किसी न साथ निभाया।
अब तो सोच जरा। कोई न बना सहारा। मनवा…
२. सुन्दर जगह है शान निराली। प्यारा है परिवार।
दिल न रजदा है खुशहाली। बेटे पोते नारा।
अन्दर ज्योति जगा। कोई न रहे तुम्हारा। मनवा…
३. भूल गया है अपनी शक्ति। तेरे अन्दर भरा खजाना।
धन यौवन में ऐश्परस्ती। हो भजन बिना पछताना।
जरा तू ध्यान लगा। हो कर सब से न्यारा। मनवा…
४. कई-कई युग गुजरे सदियां बीती।
मुड़ आ प्रभु गुण गा ले।

धर्म कमाई कुछ न कीती। प्रभु भक्ति रंग चढ़ा ले।

आवा गमन मिटा। हो जाएगा उजियारा। मनवा...

—०—

ममता

युग-युग बीत गये मेरे।
री ममता तू न गई॥

१. ऐसा भारी डाला बंधन।
कर न सकूं प्रभु तेरा चिन्तन॥
चहुं दिश विषयों के घेरे॥ री ममता...

२. ऐसा लम्बा जाल है तेरा।
धन यौवन देवे साथ न मेरा॥
घूम रही मैं अंधेरे॥ री ममता...

३. आंख मूंद कर लग गया आसन।
अंदर फैला मोह का शासन॥
गैरों ने ला दिये डेरे॥ री ममता...

४. चैन नहीं प्रभु करुणा कर दो।
अंग-अंग में अमृत रस भर दो॥
पाऊं मैं दर्शन तेरे।
री ममता क्यों न गई॥
तीनों ताप हरो मेरे॥ री ममता...

—०—

चली जा रही है, उमर धीरे-धीरे।
पल-पल व आठों पहर धीरे-धीरे॥

१. लड़कपन भी जाए, यौवन भी जाता।
बुढ़ापे का होगा असर धीरे-धीरे॥
२. तेरे हाथ पांवों में बल न रहेगा।
मंद होगी आंखें नजर धीरे-धीरे॥
३. शिथिल अंग सारे ही होंगे तुम्हारे।
झुक जाएगी यह कमर धीरे-धीरे॥
४. जो आया यहां उसको जाना पड़ेगा।
खतम होगा जीवन सफर धीरे-धीरे॥
चली जा रही······

—०—

रेंवड़ी लोहड़ी

गुड़ दी रेंवड़ी नी सोहड़ी लगदी फुलियां नाल।

१. गई दिवाली आया सियाला, लोहड़ी ने धूम मचाई॥
नई बहू से सोहड़ा लाल वी जाया, सारे देन वधाई॥
गुड़ दी···
२. आहुतियाँ पाकर यज्ञ वी कीता, ईश्वर दा गुण गाया।
श्रद्धा भक्ति दा अमृत पीता, सबका मन हरशाया॥

३. चाचे मामे ताए आए, हंस-हंस खुशी मनाई ।
बुआ मासी भैंड़ा बच्चे, रज-रज रेवड़ी खाई ।।
गुड़ दी…

४. सेव मालटा चीकू केला, मिल के नचन आए ।
अनार संतरा पपीता आड़ू, सबने भंगड़े पाए ।।
गुड़ दी…

५. सारे आवन प्यारे आवन, एह दिन नित-नित आवन ।
पेके सौरे खेडन हसन, रसगुल्ले मिठाई खावन ।।
गुड़ दी…

६. प्रेम प्यार नाल बनिया भोजन ।
आओ मिलकर खाओ ।।
सदा रहे प्रभु नाम का सिमरन ।
जीवन सफल बनाओ ।।
गुड़ दी…

७. गुण तिल जदों घुल मिल जांदे, रेवड़ी होई तयार ।।
मोटी छोटी गजक खुशबू, सबने लाई बहार ।।
गुड़ दी…

—०—

स्वागत लोहड़ी

मिलकर सारे मंगल गावो, जो परिवार आए हैं ।
जो परिवार आए हैं, श्रद्धा लेकर आए हैं ।

१. प्रभु कृपा से शुभ दिन आया।
हमने सबका दर्शन पाया।
मेरा रोम रोम हरशाया। जो...
२. दो कर जोड़ करते स्वागत।
कुछ फल फूल हैं करते अर्पित।
श्रद्धा प्रेम का इसमें अमृत। जो...
३. बहन भाई हैं सभी पधारे।
सबमें गुण हैं न्यारे न्यारे।
आए बच्चे प्यारे प्यारे। जो...
४. कर के यज्ञ मनाई लोहड़ी।
चमचे भर भर आहुति छोड़ी।
युग युग जीवे सुन्दर जोड़ी। जो...
५. हम सबका संगठन होवे भारी।
दंग रह जाए दुनियां सारी।
प्रभु की भक्ति होवे न्यारी। जो...

तपोवन ऊपर

पावन भूमि पर हैं आए। प्रभु भरपूर कर दे।
प्रभु भरपूर कर दे। श्रद्धा भक्ति भर दे।

१. ऋषि मुनियों नें किया तप।
अर्पण होकर जाना सत्य।
बने ईश्वर के वह भक्त। प्र···
२. भूमि है यह बड़ी पवित्र।
कन कन में है इसके अमृत।
सीस झुकाए हो नत मस्तक। प्र···
३. आनन्द स्वामी ने संयम किया।
सोम सुधा रस पान किया।
जग में हंस हंसा कर जीवा। प्र···
४. प्रभु आश्रित ने किया अभ्यास।
प्रभु को देखा अपने पास।
सच्चा रख ईश्वर विश्वास। प्र···
५. सबको दो प्रभु ऐसी शक्ति।
अन्तर मुख देने तेरी हस्ती।
मगन रहें हो नाम की मस्ती। प्र···

—०—

अपना कोई नहीं

कोई नहीं हमदर्दी। मेरा कोई नहीं।
१. इस दुनियां दी अजब बनावट।
अन्दर बाहर बड़ी सजावट।
कुछ दिन दी सुन्दर वरदी। मेरा···

२. मात पिता भी छोड़ गये हैं।
मुझसे मुखड़ा मोड़ गये हैं।
पास हुई न अरजी। मेरा...
३. जिसको समझा प्राण प्यारा।
छोड़ मुझे परलोक सिधारा।
प्रभु की ऐसी मरजी। मेरा...
४. बेटा बेटी पोते प्यारे।
समझा कभी न होंगे न्यारे।
सब में देखी खुद गरजी। मेरा...
५. माल खजाने प्यारे वीर।
कोई न हरता दिल दी पीर।
न आस रही किसे घर दी। मेरा...
६. युग-युग की मैं हूं भटकाई।
कर कृपा तेरे दर पर आई।
दे दर्शन है मेरी अरजी। मेरा...

—०—